

स्मृति-सन्दर्भः

श्रीमन्महर्षिप्रणीत—धर्मशास्त्रसंग्रहः

याज्ञवल्क्यादिसप्तदशस्मृत्यात्मकः

तृतीयो भागः



नाग प्रकाशक

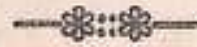
११ ए/२ ए., जवाहर नगर, दिल्ली-७

॥ श्रीगणेशोऽब्ध्यात् ॥

अथ स्मृतिसन्दर्भस्य तृतीयभागस्थ
मुद्रितस्मृतीनां नामनिर्देशः ।

स्मृतिनामानि		पृष्ठाङ्काः
१५ याज्ञवल्क्य स्मृतिः	—	१२३५
१६ कात्यायन स्मृतिः	—	१३३५
१७ आपस्तम्ब स्मृतिः	—	१३८७
१८ लघुशंख स्मृतिः	—	१४०८
१९ शङ्ख स्मृतिः	—	१४१५
२० लिखित स्मृतिः	—	१४५५
२१ शङ्खलिखित स्मृतिः	—	१४६४
२२ त्रिशिष्ठ स्मृतिः	—	१४६८
२३ औशनस संहिता	—	१५४४
२४ औशनस स्मृतिः	—	१५४६

२५	बृहस्पति स्मृतिः	—	१६१०
२६	लघुव्यास संहिता	—	१६१८
२७	(वेद) व्यास स्मृतिः	—	१६३१
२८	देवल स्मृतिः	—	१६५५
२९	प्रजापति स्मृतिः	—	१६६४
३०	लघ्वाश्वलायन स्मृतिः	—	१६८३
३१	बोधायन स्मृतिः	—	१७६७



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

स्मृतिसन्दर्भ तृतीयभाग की विषय-सूची

याज्ञवल्क्य स्मृति के प्रधान विषय

अध्याय	प्रधानविषय	पृष्ठाङ्क
--------	------------	-----------

याज्ञवल्क्य स्मृति में तीन अध्याय हैं। प्रथमाध्याय में संस्कार आश्रम, ग्रह शान्ति आदि, द्वितीयाध्याय में राजधर्म, व्रतधर्म, राजसभा, वादिप्रतिवादि का निर्णय, व्यवहार के भेद, गृहस्थ धर्म दण्डनीति, दायभाग आदि, तृतीयाध्याय में सूतक, अशौच, पाप, पापों का प्रायश्चित्त, वानप्रस्थ और संन्यास के धर्मों का वर्णन है।

१ अथाचाराध्यायः—उपोद्धात प्रकरण वर्णनम् १२३५

उस देश का वर्णन जहाँ वर्णाश्रम धर्म का विधान है (१-२)। धर्म का लक्षण, धर्मशास्त्र प्रणेता मनु आदि बीस धर्मशास्त्र प्रणेताओं के नाम और धर्म की परिभाषा (३-६)।

१ ब्रह्मचारिप्रकरणवर्णनम्—

१२३६

चार वर्ण जिनके संस्कार गर्भाधान से अन्तिम दाह संस्कार तक होते हैं (१०)। संस्कारों के नाम तथा किस समय में कौनसे संस्कार करने चाहिये (११-१५)। शौचाचार, ब्रह्मचारि के नियम, गुरु आचार्य की पूजा, वेदाध्ययन काल, गायत्री मन्त्र जप, नित्यकर्म, उपनयन काल की पराकाष्ठा, काल निकलने से ब्रात्यता आ जाती है अर्थात् संस्कार हीन हो जाता है (१६-३६)। ब्रह्मचारी को यज्ञ, हवन, पितरों का तपण और नैष्ठिक ब्रह्मचारी को आजीवन गुरु के पास रहने का विधान (४०-५१)।

१ विवाहप्रकरणवर्णनम्—

१२४०

ब्रह्मचर्य के बाद विवाह करने की आज्ञा और कन्या तथा वर के लक्षण (५२-५६)। ब्राह्म, आर्य, दैव, धर्म, राक्षस, पेशाच, आसुर और गान्धर्व आठ प्रकार के विवाहों का वर्णन। कन्या के देनेवाले पिता पितामह भ्राता और साता न हो तो कन्या का स्वयंवर करने का अधिकार है। जो मनुष्य कन्या के दोषों को छिपा कर विवाह

- १ करे उसको दण्ड का विधान (५७-६१)। कन्या देने का जिनको अधिकार है ऋतुकाल के पहले यदि कन्या को न दे तो माता पिता को भ्रूण हत्या का पाप (६२-६४)। बिना दोष के कन्या के त्यागने में दण्ड और पति को छोड़कर अपनी कामना के लिये दूसरे के पास जाती है उसे पुंश्चली कहते हैं। क्षेत्रज पुत्र किस विधि से उत्पन्न कराया जाता है इसका वर्णन (६५-६६)। व्यभिचार करनेवाली स्त्री को दण्ड का विधान (७०)। स्त्री को चन्द्रमा गन्धर्वादिको ने पवित्र बताया है (७१)। पति और पत्नी का परस्पर व्यवहार और जिन आचरणों से स्त्री की कीर्ति होती है उनका वर्णन (७२-७८)। ऋतुकाल के अनन्तर पुत्रोत्पत्ति का समय और पुरुष को अपने चरित्र की रक्षा एवं स्त्रियों का सम्मान करने का धर्म कहा गया है (७९-८२)। स्त्री को सास स्वसुर का अभिवादन तथा पति के परदेश गमन पर रहन सहन के नियम (८३-८४)। स्त्री की रक्षा कुमारी काल में पिता, विवाह होने पर पति और वृद्धावस्था में पुत्र करे स्वतन्त्र न छोड़ दे (८५)। स्त्री को पति प्रिय रहने का माहात्म्य

और सवर्णा स्त्री के होने पर उसके साथ ही धर्मकाम करने का निर्देश किया गया है। सवर्णा स्त्री से जो पुत्र उत्पन्न होता है उसी को पुत्र कहते हैं (८६-९०)।

१ वर्णजातिविवेकवर्णनम्—

१२४३

अनुलोम और प्रतिलोम जो सन्तान होती है उनकी संज्ञा (९१-९६)।

१ गृहस्थधर्मप्रकरणवर्णनम्।

१२४४

स्नान, तर्पण, सन्ध्या, अतिथि सत्कार का वर्णन (९७-१०७)। गृहस्थी को अतिथि सत्कार सबसे बड़ा यज्ञ बताया है (१०८-११४)। आचरण, सभ्यता और ब्राह्मण क्षत्रिय आदि जातियों के विशेष कर्म (११५-१२१)।

अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।

दानं दया दमः शान्तिं सर्वेषां धर्मसाधनम् ॥

किसी की हिंसा न करना, सत्य कहना, किसी का द्रव्य न चुराना, पवित्र रहना, अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना, दान देना, सब जीवों पर

दया करना, मन को दमन करना, क्षमा करना ये मनुष्य मात्र के धर्म हैं (१२२)। यह करने का विधान (१२३-१३०)।

१ स्नातकधर्मप्रकरणवर्णनम् ।

१२४७

ब्रह्मचारी के नित्य नैमित्तिक कर्मों का वर्णन किया गया है (१३१-१४२)। उपाक्रम और उत्तरा का समय और विधान तथा ३७ अनध्याय के काल बताये गये हैं (१४३-१५१)। ब्रह्मचारी और गृहस्थी के विशेष धर्म (१५२-१५५)। गृहस्थियों को जिन मनुष्यों से मिलजुल कर रहना चाहिये जैसे वैद्य इत्यादि (१५६-१५८)। सदाचार और जिनका अन्न नहीं खाना चाहिये उनका निर्देश (१५९-१६५)।

१ मध्यामध्यप्रकरणवर्णनम् ।

१२५०

निषिद्ध भोजन की गणना (१६६-१७६)। मांस के सम्बन्ध में विचार और मांस न खाने का माहात्म्य (१७७-१८१)।

१ द्रव्यशुद्धिप्रकरणवर्णनम् ।

१२५२

यज्ञ पात्रादि की शुद्धि । किस चीज से किस की शुद्धि होती है (१८२-१८६) । शुद्धि का वर्णन, जल की शुद्धि, स्थान की शुद्धि, पक्के मकान की शुद्धि आदि (१८७-१९८) ।

१ दानप्रकरणवर्णनम् ।

१२५३

ब्राह्मण की प्रशंसा और पात्र का लक्षण बताया है (१९९-२००) । गौ, पृथिवी, हिरण्य आदि का दान सत्पात्र को देना चाहिये । अपात्र को देने में दोष (२०१-२०२) । गोदान का फल, गोदान की विधि और गोदान का माहात्म्य (२०३-२०८) । पृथिवी, दीपक, सवारी, धान्य, पादुका, छत्र और धूप आदि दान का माहात्म्य । जो ब्राह्मण दान लेने में समर्थ है वह न लेवे तो उसे बड़ा पुण्य होता है (२०९-२१२) । कुशा, शाक, दूध, दही और पुष्प यह कोई अपने को अर्पण करे तो वापस नहीं करना चाहिये (२१३-२१४) ।

१ श्राद्धप्रकरणवर्णनम् ।

१२५५

पुण्यकाल का वर्णन, जैसे—अमावस्या व्यतिपात

१ तथा चन्द्र सूर्य ग्रहण इनमें श्राद्ध करने का माहात्म्य तथा कौन ब्राह्मण श्राद्ध में पूजा के योग्य हैं और कौन निन्दित है इसका विवरण (२१५-२२७)। श्राद्ध की विधि तथा श्राद्ध की सामग्री श्राद्ध के पहले दिन ब्राह्मणों को निमन्त्रण देना, किन-किन मन्त्रों से पितरों का पूजन तथा किन-मन्त्रों से वैश्वदेव का पूजन बताया गया है (२२८-२५०)। एकोदिष्ट श्राद्ध, तीर्थ श्राद्ध और काम्य श्राद्ध का विधान तथा पितरों को श्राद्ध से रूत करने में मनुष्यों को आयु, प्रजा, धन, विद्या, स्वर्ग और मोक्ष प्राप्त होता है (२५१-२७०)।

१ विनायकादिकल्पप्रकरणवर्णनम् ।

१२६०

गणनायक की शान्ति और जिस पर उनका दोष हो उसके लक्षण। गणनायक के रुष्ट होने पर मनुष्य विक्षिप्त हो जाता है। यदि कन्या पर रुष्ट होता है तो उसका विवाह नहीं होता और यदि होता है तो सन्तान नहीं होती है (२७१-२७६)। विनायक की शान्ति तथा अभिषेक और हवन एवं शान्ति के अवसान में गौरी का पूजन (२७७-२८२)।

१ ग्रहशान्तिप्रकरणवर्णनम् ।

१२६२

नवग्रह की शान्ति, ग्रहों के मन्त्र, उनका दान और जप बताया गया है और अन्त में कहा गया है—

ग्रहाधीना नरेन्द्राणामुच्छ्रयाः पतनानि च ।

भवाभावौ च जगतस्तस्मात् पूज्यतमाः स्मृताः ॥

अर्थात् राजाओं की उन्नति तथा अवनति, संसार की भावना और अभावना सब ग्रहचक्रों पर निर्भर रहता है । अतः ग्रह शान्ति करनी चाहिये ग्रह किस धातु का बनाना चाहिये यह भी बताया गया है (२६३-३०८) ।

१ राजधर्म प्रकरण वर्णनम् ।

१२६३

शासक राजा के लक्षण और उसकी योग्यता (३०६-३११) । राजा को कैसे मन्त्री और पुरोहितों ज्योतिषियों को रखना, उनके लक्षण । जो दण्डनीति और अथर्वविद्या में कुशल हो ऐसे मन्त्री और पुरोहित को रखना चाहिये । राजा का निवास स्थान नगर से दूर जंगल में हो और दुर्ग रचना किस प्रकार करनी चाहिये । अन्त

- १ में प्रजा को अभय देना यह राजा का परम धर्म बतलाया गया है (३०६-३२३)। राजा की दिनचर्या का वर्णन और प्रजा का पालन, दुष्ट राज-कर्मचारियों से तथा उत्कोच जीवियों का (रिश्वत लेनेवालों का) सब धन छीनकर राज्य से निकाल दे और उसके स्थान पर श्रेष्ठ जीवियों को सम्मान से रखे। जैसे—

अन्यायेन नृपो राष्ट्रात् स्वकोषं योऽभिवर्द्धयेत् ।
सोऽचिराद्विगतश्रीको नाशमेति सवान्धवः ॥

अर्थात् जो राजा अन्याय से राष्ट्र का रुपया अपने खजाने में जमा करता है वह राजा बहुत जल्दी सयरिवार नष्ट हो जाता है। जब राजा के हाथ में कोई नया देश आवे तब उसी देश का आचार, व्यवहार, कुल स्थिति, मर्यादा जो वहाँ पहले से है उसी पर चलना चाहिये उसमें उलट-फेर नहीं करना चाहिये (३२४-३४३)। साम, दाम, दण्ड, भेद कहां पर प्रयोग करने चाहिये उनका वर्णन। दूसरे के राष्ट्र में कब घुसना उसकी परिस्थिति का वर्णन (३४४-३४८)। राजधर्म में यह बताया है कि पुरुषार्थ और भाग्य

१ दोनों को तराजू में तोलकर रखे एक से काम नहीं चलता (३४६-३५१)। राजा को मित्र बनाना सब से बड़ा लाभ है (३५२-३५३)। दण्ड का विधान—जो अपने स्थान से चलित हो उसको दण्ड देने का विधान। बागू दण्ड, धनदण्ड, वधदण्ड और धिक्दण्ड ये चार प्रकार के दण्ड हैं। अपराध देश काल को देखकर इन दण्डों की व्यवस्था करे (३५४-३६८)।

२

व्यवहाराध्यायः

तत्रादौ—सामान्यन्याय प्रकरणम्—

१२६६

राजा को व्यवहार देखने की योग्यता और अपने साथ सभासदों का नियोग तथा उनकी योग्यता। व्यवहार की परिभाषा—

स्मृत्याचार व्यपेतेन मार्गेणाधर्षितः परैः ।

आवेदयति चेद्राज्ञे व्यवहारपदं हि तत् ॥

अर्थात् आचार और नियम विरुद्ध जो किसी को तंग करे उसपर राजा के पास जो आवेदन किया जाता है उसको व्यवहार कहते हैं (१-४)।

२ व्यवहार के चार बाद बतलाये हैं। जैसे—
 आवेदन (दरखास्त), प्रत्यर्थी के सामने लेख,
 सम्पूर्ण कार्य का वर्णन, प्रत्यर्थी के उत्तर, इकरार
 लिखना (झूठा होने पर दण्ड होगा) (५-८)।
 जिस पर एक अभियोग हुआ है उसका फैसला
 नहीं होने तक दूसरा अभियोग नहीं लगाया
 जाता है। चोरी मारपीट का अभियोग उसी
 समय लगाया जाता है। दोनों से जमानत लेनी
 चाहिये। झूठे मुकदमे में दुगुना दण्ड लगाना
 चाहिये (९-१२)। झूठे बनावटी गवाह की
 पहचान—उसके पसीना आने लगता है तथा
 दृष्टि स्थिर नहीं रहती है (१३-१५)। दोनों पक्ष
 के साक्षी होने पर पहले वादी के साक्षी लेने
 चाहिये। जब वादी का पक्ष गिर जाय तब
 प्रतिवादी अपने पक्ष को साक्षी से पुष्ट करे
 इत्यादि। यदि झूठा मुकदमा हो तो उसे प्रत्यक्ष
 प्रमाणों से शुद्ध कर लेवे। जहाँ दो स्थितियों में
 विरोध हो वहाँ व्यवहार से निर्णय करना।
 अर्थशास्त्र और धर्मशास्त्र के मिलने में विरोध
 आ जाय वहाँ धर्मशास्त्र को ऊँचा स्थान देना
 चाहिये (१६-२०)। प्रमाण तीन प्रकार के होते

२ हैं—लेख (लिखित), भोग (कब्जा), साक्षी (गवाह) इन तीन प्रमाणों के न होने पर दिव्य (ईश्वर को पुकार कर) शपथ करते हैं (२१-२२)। बीस वर्ष तक भूमि किसी के पास रह जाय या दस वर्ष तक धन किसी के पास रह जाय और उसका मालिक कुछ न कहे तो व्यवहार का समय चला जाता है, किन्तु यह नियम धरोहर, सीमा, जड़ और बालक के धन पर लागू नहीं होगा (२३-२५)। आगम (श्रुति) भोग (कब्जा) के सम्बन्ध में निर्णय (२६-३०)। राजा इनके निर्णय के लिये एक सभा बनावे और बल से एवं किसी उपाधि से जो व्यवहार किया गया है उसको वापस कर देवे (३१-३२)। निधि (गड़ा हुआ धन) का निर्णय और उसमें से छठा हिस्सा राजा का एवं जो निधि राजा को नहीं बताये उसको दण्ड (३३-३७)।

२ श्रृणादान प्रकरणम्—

१२७३

श्रृण (कर्जा) की वृद्धि का दर और किसको किस का श्रृण देना और नहीं देना इसका निर्णय—
स्त्री केवल पति के साथ जो श्रृण किया है उसको

२ देगी और बाकी को नहीं। ऋण दुगुना तक हो सकता है, पशु की सन्तति तथा धान तिगुना इत्यादि का वर्णन है। जब चुकाने पर धनी न लेवे तो उस तिथि से वृद्धि नहीं होगी (३८-६५)।

२ उपनिधिप्रकरणवर्णनम्— १२७५

निक्षेप (धरोहर) वर्णन (६६-६८)।

२ साक्षीप्रकरणविधिवर्णनम्— १२७६

साक्षी का प्रकरण—साक्षी कौन होना चाहिये और साक्षी के लक्षण—जिसको दोनों पक्ष स्वीकार करे वह एक भी साक्षी हो सकता है। साक्षी जब न्यायालय में जाय उसे न्यायाधीश यह सुनावे—

ये पातककृतांलोका महापातकिनान्तथा ।

अग्निदानाश्च ये लोका ये च स्त्रीबालघातिनाम् ।

तान् सर्वान् समवाप्नोति यः साक्ष्यमनृतं वदेत् ॥

अर्थात् अतीव पापियों को जो नरक में जाना पड़ता है, महापापियों को जो नरक भोगना पड़ता है, आग लगानेवाले को और स्त्री तथा

२ बालक मारनेवाले को जो नरक भोगना पड़ता है वह दोष उसे होगा जो न्यायालय में झूठी साक्षी देगा। कूट (जाली) साक्षियों का वर्णन, कूट साक्षी को आठ गुना दण्ड होना चाहिये (६६-८५)।

२ लिखित प्रकरणम्—

१२७८

लेख में गवाह होना चाहिये तथा सम्बत्, महीना और दिन भी होना चाहिये, लेख की समाप्ति में ऋण लेनेवाला अपना हस्ताक्षर कर दे एवं अपना तथा अपने पिता का नाम लिख दे। लेख बिना साक्षी के भी हो सकता है जो अपने हाथ से लिखा हुआ हो किन्तु वह बलपूर्वक लिखाया हुआ न हो। रुपया जितना देता जाय उस कागज के पीछे लिखता जाय। धन चुक जाने पर उस कागज को फाड़ देवे या साक्षी के सामने ऋणी को वापस दे दे (८६-९६)।

२ दिव्य प्रकरणम्—

१२७९

जब कोई साक्षी आदि प्रमाण न मिले तब दिव्य कराया जाता है। दिव्य इसने प्रकार के होते हैं—

- २ १—तुला, २—अग्नि, ३—जल, ४—विष, ५—कोश ।
 ये दिव्य बड़े मामलों में किये जाते हैं छोटे व्यव-
 हार में नहीं । १ तुला— तराजू बनाकर तोला
 जाता है जो तोलने पर ऊपर या नीचे जाता है
 उसकी विधि पुस्तक में लिखी है । २ अग्नि—
 लोहे के गोले को गरम कर दोनों हाथों में लेकर
 चलना होता है जो शुद्ध हो उसके हाथ नहीं
 जलते हैं । ३ जल— नाभी मात्र गहरे जल में
 तीर डालकर धुलाना पड़ता है । ४ विष— शुद्ध
 को खिलाने पर उसे जहर नहीं लगता । ५ कोश—
 किसी देवता का जल पिलाने से उसको अगर
 चौदह दिनों तक अनिष्ट नहीं हुआ तो शुद्ध
 समझा जाता है (६७-११५) ।

२ दायविभाग प्रकरणम्

१२८१

पिता को अपनी इच्छा से विभाजन करने का
 अधिकार है (११६-११८) । पिता के बाद भाई
 अपने आप विभाग किस प्रकार से करे और जो
 धन अविभाज्य है उसका वर्णन (११६-१२१) ।
 भाईयों का बटवारा और भाईयों के लड़कों का
 विभाग उसके पिता के नाम से होगा । जिन

- २ भाईयों का संस्कार नहीं हुआ उनका पैतृक धन से संस्कार और निर्वाह—बहनों को अपने हिस्से से चौथाई देकर विवाह करे (१२२-१२७)। जाति विभाग से बटवारा, अयोग से जो लड़का पैदा किया गया उसका भार (१२८-१३०)। बारह प्रकार के पुत्रों का वर्णन (१३१-१३५)। दासी पुत्र का हक और अपुत्र के धन विभाग का नियम (१३६-१३९)। वानप्रस्थ, संन्यासी और आचार्य के धन का विभाग (१४०)। समश्रुष्टि (मिले हुए) भाईयों का विभाग और उन लड़कों का वर्णन जिनको पिता की जायदाद में भाग नहीं मिलता है। जिनको भाग न मिला उनके लड़कों को मिल सकता है (१४१-१४३)। उनके लड़कों और स्त्री को मिल सकता है (१४४-१४५)। स्त्री धन की परिभाषा तथा स्त्री धन को कोई नहीं ले सकता किन्तु आपत्ति काल में और धर्म कार्य में तथा विमारी में स्त्री का पति स्त्री के धन को ले सकता है (१४६-१५१)। जो पैतृक धन को छिपा दे उनका निर्णय साक्षी लेख और भाई विरादरी में पूछकर करना चाहिये (१५२)।

२ सीमाविवादप्रकरणवर्णनम्—

१२८५

सीमा विभाग— गाँव की, खेत की सीमा के विभाग में वन में रहनेवाले ग्वाले, खेती करनेवाले इनसे सीमा के सम्बन्ध में पूछना चाहिये। पुल, खाई या खम्भे से सीमा का चिह्न बतलाना चाहिये। सीमा के सम्बन्ध में झूठ बोलनेवाले को कड़े दण्ड का विधान कहा है। दूसरे की जमीन पर कुंआ तालाब बनाना उसमें जिसकी भूमि है उसी का अधिकार रहेगा या राजा का (१५३-१६१)।

२ स्वामिपालविवादप्रकरणवर्णनम्—

१२८६

दूसरे के खेत में भैंस, गाय, बकरी चराने में जितना वे हानि करे उसका दूना दिलाना चाहिये बंजर भूमि पर भी गधा, ऊँट आदि को चराने पर वहाँ जितना घास पैदा हो सकता है उतना उनके स्वामियों से हानि रूप में लिया जाना चाहिये। ग्वालों को फटकारना और उनके स्वामियों को प्रायः दण्ड देना। सड़क गाँव की बंजर जगहों में चराने में कोई दोष नहीं है।

२ सांड वगैरह को छोड़ देना चाहिये । गायों को चरानेवाला ग्वाला जिसके घर से जितनी गाय ले जाय उसको उतनी ही सायंकाल लौटा देवे । जिस ग्वाले को वेतन दिया जाता है अगर अपनी गलती से किसी पशु को नष्ट करवा दे तो मूल्य उससे लिया जाय । प्रत्येक गाँव में गोचर भूमि रखी जाय (१६२-१७०) ।

२ अस्वामिविक्रयप्रकरणवर्णनम्—

१२८७

खरीद और अस्वामी विक्रय— लेनेवाले को चीज का दोष न बतला कर जो बेचा जाय उसे चोरी की सजा होगी । किसी के धन को दूसरा आदमी बेच लेवे तो धनवाले को मिल जाय और खरीददार अपना मूल्य ले जावे । खोया हुआ या गिरा हुआ द्रव्य किसी को मिल जाय तो उस वस्तु को पुलिस में जमा न देने पर पानेवाला दोष का भागी होता है । एक मास तक कोई न लेवे तो वह धन राजा का हो जाता है (१७१-१७७) ।

२ दत्ताप्रदानिकप्रकरणवर्णनम्—

१२८८

अपने घर में जिस वस्तु को देने से विरोध न हो

२ तथा स्त्री और बच्चों को छोड़कर गृहपति सब दान में दे सकता है। सन्तान होने पर सब दान नहीं कर सकता है तथा दी हुई वस्तु फिर दान नहीं हो सकती। जो दिया जाय वह राजकीय नियम से प्रकाशित कर दिया जाय (१७८-१७९)।

२ क्रीतानुशयप्रकरणवर्णनम्—

१२८८

क्रीतानुशय अर्थात् मूल्य लेने पर वापस किया जा सकता है। दस दिन तक बीज (अन्न) लौटाया जा सकता है। लोहे की चीजें एक दिन, बैल लेने पर पाँच दिन, रत्न की परीक्षा आठ दिन तक, गाय तथा अन्य जीव जन्तु तीन दिन तक, सोना आग में तपाने पर घटता नहीं है और चाँदी दो पल कम हो जायगी इस प्रकार खरीदी हुई वस्तु तीन दिन तक वापस की जा सकती है (१८०-१८४)।

अभ्युपेत्याशुश्रूषाप्रकरणवर्णनम्—

१२८९

संविद्व्यतिक्रमप्रकरणवर्णनम्—

१२९०

संवित् व्यतिक्रम (अपने निश्चय को तोड़ना) जैसे

- २ बल पूर्वक किसी को पकड़कर गुलाम बना लिया हो ।

निजधर्माविरोधेन यस्तु सामयिको भवेत् ।

सोऽपि यत्नेन संरक्ष्यो धर्मो राजकृतश्च यः ॥

अपने धर्म से मिला हुआ जो समय का धर्म और राजा के धर्म को भी पालन करना चाहिये । जो समुदाय का धन लेवे और जो अपनी प्रतिज्ञा को तोड़ देवे उसका सब कुछ छीनकर देश से निकाल देवे (१८५-१९५) ।

- २ वेतनादानप्रकरणवर्णनम्—

१२६०

जो पहले वेतन ले लेवे और समय पर उस काम को छोड़ देवे उससे दूना धन लेना चाहिये । जबतक काम करे उसका वेतन चुका देना चाहिये (१९६-२०१) ।

- २ द्यूतसमाह्वयप्रकरणवर्णनम्—

१२६१

चोरों को पहचानने के लिये जूआ किसी स्थान पर करवाया जाता है और उसमें जीतनेवाले से राजा के लिये दस रुपया ले लेना चाहिये (२०२-२०६) ।

२ वाक्पारुष्यप्रकरणवर्णनम्----

१२६१

वाक् पारुष्य (अपशब्द कहने का दण्ड) जैसे कोई किसी के माँ बहन को गाली दे उसे पच्चीस पल दण्ड देना चाहिये । इसी प्रकार पातक तथा उपपातक को दण्ड के उपयोग है (२०७-२१४) ।

२ दण्डपारुष्यप्रकरणवर्णनम्----

१२६२

किसी पर लाठी चलाना या किसी चीज से पीड़ा पहुंचाना इसमें सौ दण्ड, किन्तु रुधिर निकलने पर दुगुना दण्ड, हाथ पैर टट जाय तो मध्यम साहस का दण्ड, किसी के मकान पर दारुण चीज फेंकने पर सोलह पल का दण्ड, पशुओं के अंग-च्छेद करने पर दो पल दण्ड, पशु की इन्द्रिय काटने पर अथवा मृत्यु होने पर द्विगुण दण्ड और पेड़ों की टहनियों को काटने पर बीस पल का दण्ड देना चाहिये (२१५-२३२) ।

२ साहसप्रकरणवर्णनम्—

१२६४

विक्रोयासम्प्रदानप्रकरणवर्णनम्—

१२६७

“सामान्य द्रव्य प्रसभ हरणान् साहसं स्मृतम्”
बलपूर्वक किसी की वस्तु को छीनना इसको

- २ साहस कहते हैं। जो जितने मूल्य की वस्तु छीन कर ले जावे उसको उससे दूना दण्ड दिलवाना चाहिये तथा छिपाने पर चार गुना दण्ड। स्वच्छन्दता से किसी विधवा स्त्री के साथ गमन करनेवाला या बिना कारण किसी को गाली देने वाला और झूठी शपथ करनेवाला तथा जिस काम के योग्य न हो उसको करने को तैयार हो जाना एवं दासी के गर्भ को नष्ट कर देना, पशु के लिङ्ग को काट देना, पिता पुत्र गुरु और स्त्री को छोड़ने वाले को सौ पल दण्ड का विधान बताया है। धोबी दूसरे के कपड़ों को अपने पास रखे तो उसको तीन पल दण्ड। पिता और पुत्र की लड़ाई में जो गवाही देवे उसे तीन पल दण्ड। तराजू और बाटों को जो छल कपट से बनाकर व्यवहार करे तो उसे पूरा दण्ड। जो कपट को सत्य और सत्य को कपट कहे उसे भी साहस प्रकरण का दण्ड। जो वैद्य झूठी दवा बनावे उसको भी दण्ड। जो कर्मचारी अपराधी को छोड़ देवे उसको दण्ड। जो मूल्य लेकर वस्तु को नहीं देता है उसको भी दण्ड (२३३-२६१)।

२ सम्भूयसमुत्थानप्रकरणवर्णनम्—

१२६७

कई आदमी मिलकर जो व्यापार करते हैं उनको उस व्यापार में लाभ और हानि बराबर उठानी पड़ेगी। या उन लोगों ने पहले जो प्रतिज्ञा कर ली हो (२६२-२६८)।

२ स्तेयप्रकरणवर्णनम्—

१२६८

चोर को पकड़ने वाले को पहले उसके पैरों के चिह्न से या पहले जो चोरो में पकड़े गये हों जुआरी वैश्यागामी तथा शराबी और बात में अटपट करे तो उनको पकड़ लेना चाहिये। चोरी में पूछने पर जो सफाई नहीं देवे उसे चोरी का दण्ड दिया जाता है। चोर को भिन्न भिन्न प्रकार से ताड़ना देकर चोरी पूछ लेनी चाहिये। इस प्रकरण में आया है—

विषाग्निदां पतिगुरुनिजापत्यप्रमापिणीम् ।

विकर्णकरनासोष्ठीं कृत्वा गोभिः प्रमापयेत् ॥

विष देनेवाली, अग्नि लगानेवाली, पति, गुरु और अपने बच्चों को मारनेवाली स्त्री के नाक कान काटकर जल में बहा देना चाहिये।

२ क्षेत्रवेश्मवनग्रामविवीतखलदाहकाः ।

राजपत्न्यभिगामी च दग्धव्यास्तु कटाग्निना ॥

खेत, मकान और ग्राम इनको जलानेवाले को और राजा की स्त्री के साथ गमन करनेवाले को आग में जला देना चाहिये (२६६-२८५) ।

२ स्त्रीसंग्रहणप्रकरणवर्णनम्—

१३००

प्रकीर्णकप्रकरणवर्णनम्—

१३०१

किसी स्त्री के केशों को पकड़ने या उसकी करधनी या स्तन मरदन करना या अनुचित हँसी करना ये चिह्न व्यभिचार के समझे जायेंगे । स्त्री के ना कहने पर जबरदस्ती हाथ लगावे तो सौ पल और पुरुष के ना करने पर दुगुना दण्ड । किसी अलङ्कृत कन्या को हरण करे उसको कड़ा दण्ड यदि लड़की की इच्छा हो तो दण्ड नहीं होता है । पशु के साथ व्यभिचार करनेवाले को सौ पल दण्ड । नौकरानी के साथ व्यभिचार करनेवाले को दण्ड । जो वेश्या पैसा लेकर बाद में रोके तो उसे दूना दण्ड । किसी लड़केसे या किसी साधुनी के साथ अप्राकृतिक मैथुन करनेवाले को

२ चौबीस पल दण्ड । राजा की आज्ञा में रहकर जो कम या विशेष लिखे उसको दण्ड । छल से छोटे सोने को बेचनेवाले तथा मांस के बेचनेवाले को अङ्ग हीन करना और उत्तम दण्ड देना चाहिये जो स्त्री अपने पार को चोर कहकर भंगा देवे उसे पांच सौ पल दण्ड देना चाहिये । राजा के अनिष्ट कहनेवाले को या राजा के भेद को खोलने वाले की जिह्वा काट लेनी चाहिये (२८६-३१०) ।

३ आशौचप्रकरणवर्णनम् —

१३०३

दो वर्ष से कम उम्र के बच्चे को भूमि में गाड़ देना चाहिये । बच्चे के मरने पर सातवें या दसवें दिन दूध देना चाहिये (१-६) ।

इसमें संसार की असारता बताई है । किसी के मरने पर ऐसा नहीं चाहिये यदि उसी दिन घर में दूसरे का जन्म हो जाय तो पहले के सूतक से वह शुद्ध हो जायगा । राजाओं को और यज्ञ में बठे हुए ऋषियों को सूतक नहीं लगता है । इस प्रकार सूतक का वर्णन किया है (७-३४) ।

३ आपद्धर्मप्रकरणवर्णनम्—

१३०७

आपत्ति में ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य कर्म से निर्वाह कर सकता है। परन्तु मांस तिल आदि आपत्ति में भी न बेचे।

लाक्षालवणमांसानि पतनीयानि विक्रये ।

पयोदधि च भद्यञ्च हीनवर्णकराणि च ॥

अर्थात् लाख, लवण और मांस बेचने से पतित हो जाता है। कृषि, शिल्प, नौकरी, चक्रवृद्धि, इक्का हांकना और भीख मांगना इनसे आपत्ति काल में जीवन निर्वाह कर सकता है (३५-४४)।

३ वानप्रस्थधर्मप्रकरणवर्णनम् ।

१३०८

वानप्रस्थ धर्म का वर्णन आया है। वानप्रस्थ स्त्री को अपने साथ ले जावे या अपनी सन्तान के पास छोड़ देवे। वानप्रस्थ इन्द्रियों को दमन करनेवाला, प्रतिग्रह न लेनेवाला, स्वाध्याय करने वाला होना चाहिये। चान्द्रायण आदि से समय व्यतीत करे, वर्षा में ठण्डी जगह रहे, हेमन्त में गीले कपड़ों से रहे अर्थात् जितनी शक्ति हो उसी हिसाब से वन में तपस्या करता रहे (४५-५५)।

३ यतिधर्मप्रकरणवर्णनम्----

१३०६

यति सम्पूर्ण प्राणीमात्र का हित करनेवाला, शान्त और दण्ड धारण करने वाला हो। यति के सब पात्र बांस और मिट्टी के होते हैं इनकी शुद्धि जल से हो जाती है। यति को राग द्वेष का त्याग कर अपने आपकी शुद्धि जिससे आत्मज्ञान का विकाश हो ऐसा करना चाहिये।

सत्यमस्तेयमक्रोधो हीः शौचं धीर्धृतिर्दमः ।

संयतेन्द्रियता विद्या धर्मः सार्व उदाहृतः ॥

सत्य, अस्तेय, अक्रोध, पवित्रादि में सब धर्म बतलाये हैं (४६-६६)। अध्यात्म ज्ञान का प्रकरण आया है। जैसे तप्त लौह पिण्ड से चिनगारी निकलती है उसी प्रकार उस प्रकाश पुंज आत्मा से यह समष्टि व्यष्टि संसार रूपी चिनगारी निकलती है। आत्मा अजर अमर है शरीर में आने से इसे जन्म लेना कहते हैं। सूर्य की तपन से वृष्टि फिर औषधि तथा अन्न होकर शुक्र हो जाता है। स्त्री पुरुष के संयोग से यह पञ्चधातु मय शरीर पैदा होता है। एक एक तत्त्व से

३. शरीर की एक एक चीज का बनना लिखा है। चौथे महीने में पिण्डाकार बनता है तथा पाँचवें में अंग बनने लग जाते हैं। छठे महीने में बल, नख, रोम और सातवें आठवें में चमड़ा, मांस बनकर स्मृति पैदा हो जाती है। इस प्रकार जन्म मरण के दुःख को दिखाया गया है। मनुष्य शरीर में कितनी नस कितनी धमनी तथा मर्म-स्थान हैं इन सबका वर्णन कर शरीर को अस्थिर अनित्य नाशवान् बतला कर मोक्ष मार्ग में लगने का उपदेश किया गया है। योगशास्त्र, उपनिषदों के पठन एवं वीणा वादन से मन की एकाग्रता बताई है।

वीणावादनतत्त्वज्ञः श्रुतिजातिविशारदः ।

तत्त्वज्ञश्चाप्रयासेन मोक्षमार्गं नियच्छति ॥

वीणा वादन के तत्त्व को जाननेवाला और ताल के ज्ञानवाला मोक्ष मार्ग पा लेता है। इस प्रकार मोक्ष मार्ग के साधन और संसार के अनित्य सुखों के वैराग्य का वर्णन तथा कुण्डलिनी योग, ध्यान, धारणा और सत्य की उपासना एवं वेद

३ का अभ्यास बताकर जीवन यात्रा का श्रेय नीचे लिखे श्लोक में स्पष्ट किया है—

न्यायागतधनस्तत्त्वज्ञाननिष्ठोऽतिथिप्रियः ।

श्राद्धकृत् सत्यवादी च गृहस्थोऽपि हि मुच्यते ॥

न्याय से आये हुए धन से जीवन बिताने वाला, तत्त्व ज्ञान में जिसको निष्ठा हो, अतिथि सत्कार तथा श्राद्ध करनेवाला, सत्यवादी गृहस्थी भी इस जन्म मरण से छूट जाता है (६७-२०५) ।

३ प्रायश्चित्तप्रकरणवर्णनम्—

१३२३

पापी महापापी कर्म के अनुसार नरक भोगने के अनन्तर जब मनुष्य योनि में आते हैं तब ब्रह्म-हत्यारा जन्म से ही क्षय रोगी होता है । परस्त्री को हरनेवाला, ब्राह्मण के धन को हरने वाला ब्रह्म-राक्षस होता है । जो पाप को समझने पर भी प्रायश्चित्त नहीं करते हैं वे रौरव नरक में जाते हैं । इस प्रकार महानरकों का वर्णन आया है । महा पापी चार हैं—ब्रह्म हत्यारा, सोने को चुराने वाला, गुरु की स्त्री से गमन करने वाला और

३ मद्य पीनेवाला तथा जो इनके साथ रहता है वह भी महापातकी होता है। इसके बाद आगे के श्लोकों में उपपातकों की गणना की है। महापातकी को आमरणान्त प्रायश्चित्त बतलाया है। अन्य पापों की शुद्धि के लिये चान्द्रायण आदि व्रत बतलाये हैं। गर्भपात और भर्तृ हिंसा स्त्री के लिये महापाप है। शरणागत को मारने वाले की बच्चों को मारनेवाले, स्त्री के हिंसक और कृतघ्न की कभी शुद्धि नहीं होती है। सान्तपन कृच्छ्र, पर्णकृच्छ्र, पादकृच्छ्र, तप्तकृच्छ्र, अतिकृच्छ्र, कृच्छ्रातिकृच्छ्र, तुला पुरुष, चान्द्रायण व्रत और कृच्छ्रचान्द्रायणादि व्रत बतलाये गये हैं। ऋषियों ने याज्ञवल्क्य से धर्मों को सुनकर यह कहा कि जो इसको धारण करेगा वह इस लोक में यश का प्राप्त कर अन्त में स्वर्गलोक को प्राप्त होगा। जो जिस कामना से धारण करेगा उसकी कामनाय पूर्ण सफल होंगी। ब्राह्मण इसको जानने से सत्पात्र, क्षत्रिय विजयी, वैश्य धनधान्य सम्पन्न, विद्यार्थी विद्यावान् होता है। इसको जानने और मनन करने से अश्वमेध यज्ञ के फल को प्राप्त होता है (२०६-२३४)।

कात्यायन स्मृति के प्रधान विषय

- १ यज्ञोपवीतकर्मप्रकरणवर्णनम्— १३३५
यज्ञोपवीत बनाने का माप और धारण विधि
(१-४)। मातृका, वसुधारा और नान्दी श्राद्ध का
विधान (५-१८)।
- २ नित्यनैमित्तिक(श्राद्ध)कर्मवर्णनम्— १३३७
नित्य नैमित्तिक श्राद्ध विधि (१-१४)।
- ३ त्रिविधक्रियावर्णनम्— १३३६
श्राद्धादि सम्पूर्ण कार्य अपनी अपनी शाखा के
अनुसार करने का विधान (१-१४)।
- ४ श्राद्धप्रकरणवर्णनम्— १३४०
सम्पूर्ण अध्याय में श्राद्ध की विधि बताई है
(१-१२)।
- ५ श्राद्धप्रकरणवर्णनम्— १३४१
वृद्धि श्राद्ध आदि अन्य पर्वों पर श्राद्ध का वर्णन
(१-११)।

६ अनेककर्मवर्णनम्—

१३४३

आधान काल और तत्सम्बन्धि अग्निहोत्र तथा परिवेत्ति का वर्णन (१-१५)।

७ शमीगर्भाद्यनेकप्रकरणवर्णनम्—

१३४४

शमी गर्भ काष्ठ पीपल आदि का वर्णन। अग्नि मन्थन की प्रक्रिया, अरणी निर्माण, किस प्रकार काष्ठ की अरणी बनानी, अरणी मन्थन से निकाली हुई अग्नि ही यज्ञ में प्रशस्त होगी (१-१४)।

८ सयज्ञस्रुवसमिधलक्षणवर्णनम्—

१३४६

अरणी मन्थन विधान। दर्श पौर्णमास्य यज्ञ में समिधा का मान तथा समिधा हरण विधि (१-२४)।

९ सन्ध्याकालाद्युद्दिश्यकर्मवर्णनम्—

१३४८

सायंकाल का निर्णय एवं सार्वकालीन अग्निहोत्र का समय तथा विधि। प्रज्वलित अग्नि में ही आहुति देना, यदि प्रज्वलित नहीं हो तो पंखे (व्यजन) से हवा देना मुख से नहीं (१-१५)।

१० प्रातःकालिकस्नानादिक्रियावर्णनम्— १४५०

प्रातःकाल का स्नान, नदी की परिभाषा, नदी कितनी वेगवती धारा को कहते हैं। दन्तधावन, मुख और नेत्र प्रक्षालन की विधि। कूप स्नान भी गंगा स्नान के समान ग्रहण आदि पर्व में होता है (१-१४)।

११ सन्ध्योपासनविधिवर्णनम्— १४५१

सन्ध्योपासन का निर्देश—जबतक सन्ध्या न करे तबतक अन्य किसी देव एवं पितृ कार्य को करने का अधिकार नहीं है। सन्ध्या विधि एवं सूर्योपस्थान कर्म (१-१७)।

१२ तर्पणविधिवर्णनम्— १४५२

देव, ऋषि तथा पितृ तर्पण की विधि बताई गई है (१-६)।

१३ पञ्चमहायज्ञविधिवर्णनम्— १४५४

पञ्च महायज्ञ—देवयज्ञ, भूतयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ, पितृ-यज्ञ और मनुष्ययज्ञ इनको महायज्ञ कहा है तथा नित्य करने की विधि बताई है (१-१४)।

१४ ब्रह्मयज्ञविधिवर्णनम्— १३५५

ब्रह्मयज्ञ का वर्णन (१-१५) ।

१५ यज्ञविधिवर्णनम्— १३५७

उपर्युक्त पञ्च महायज्ञों की विस्तार से विधि बताई गई है (१-२१) ।

१६ श्राद्धे तिथिविशेषेणविधिवर्णनम् । १३५६

श्राद्ध की तिथियों का निर्देश, तिथि परत्व श्राद्ध विधान (१-२३) ।

१७ श्राद्धवर्णनम् । १३६२

श्राद्ध की विधि का निर्देशन (१-२५) ।

१८ विवाहाग्निहोमविधानवर्णनम् । १३६४

वैवाहिक अग्नि से प्रातः सायं हवन का विधान, चरु का वर्णन और कुशा विष्टर का मान (१-२३)

१९ सकर्तव्यतास्त्रीधर्मवर्णनम् । १३६७

गृहस्थाश्रमी को स्त्री के साथ अग्निहोत्र का विधान । स्त्रियों में श्रेष्ठ स्त्री वही है जो सौभाग्यवती हो,

ब्राह्मणों में ज्येष्ठ श्रेष्ठ वही है जो विद्या एवं तप में श्रेष्ठ है। स्त्री को पति का आदेश मानकर अग्निहोत्र करने से सौभाग्य बढ़ता है तथा पति की आज्ञानुसार चलने से इहलोक और परलोक दोनों में परम सुख प्राप्त होता है (१-२३)।

२० द्वितीयादिस्त्रीकृते सति वैदिकाग्निवर्णनम् १३६६

स्त्री के साथ ही यज्ञ की विधि। स्त्री के मृत होने पर भी गृहस्थाश्रम में रहता हुआ अग्निहोत्र करता रहे। श्लोक दस में श्रीरामचन्द्रजी का उदाहरण दिया है कि उन्होंने सीताजी की प्रतिमा बनाकर उसके साथ यज्ञ किया (१-१६)।

२१ मृतदाहसंस्कारवर्णनम् । १३७१

मृतक का संस्कार बतलाया गया है (१-१६)।

२२ दाहसंस्कारवर्णनम् । १३७२

मृतक के दाह संस्कार का वर्णन (१-१०)।

२३ विदेशस्थमृतपुरुषाणां दाहसंस्कारवर्णनम् १३७३

विदेश में मृत हुए पुरुष के दाह संस्कार के सम्बन्ध में कहा गया है (१-१४)।

२४ सूतकेकर्मत्यागःषोडशश्राद्धविधानवर्णनञ्च । १३७५

सूतक में सब प्रकार के स्मार्त कर्मों का त्याग किन्तु वैदिक कर्म हवन आदि सुष्क फलों से करता रहे। सपिण्डीकरण तक सोलह श्राद्ध करने से शुद्धि होती है (१-१६)।

२५ नवयज्ञेनविनानवान्नभाजनेप्रायश्चित्तवर्णनम् १३७६

नवान्न भक्षण करने से पहले नवान्न यज्ञ करना चाहिये। विना यज्ञ में दिये अन्न भक्षण का प्रायश्चित्त (१-१८)।

२६ नवयज्ञकालाभिधानवर्णनम् । १३७८

अन्वाहार्यलक्षणम्, होमद्वयात्ययादौपुनराधान वर्णनम् । १३७९

नव यज्ञ का समय—श्रावणी, कृष्णाष्टमी, शरद् एवं वसन्त में नव यज्ञ (१-१७)।

२७ प्रायश्चित्तवर्णनम् । १३८०

अन्वाहार्य तथा कर्म के आदि में शुद्धि के लिये प्रायश्चित्त का विधान (१-२१)।

प्रायश्चित्तवर्णनमुपाकर्मणःफलनिरूपणवर्णनम् । १३८२

२८ सूतकादिनाश्रवणकर्मलोपे कर्मविशेषाभिधानम्,

प्रायश्चित्त वर्णनम् ।

१३८३

प्रायश्चित्त उपाकर्म उत्सर्ग की विधि और काल
(१-१६) ।

२९ श्राद्धवर्णनम्, पश्वाङ्गानांनिरूपणवर्णनम् १३८४

पिण्ड श्राद्ध, आम श्राद्ध और गया श्राद्ध का वर्णन
तथा श्राद्ध में कुशा आदि का वर्णन बताया है
(१-१६) ।

आपस्तम्बस्मृति के प्रधान विषय

१ गोरोधनादिविषये-गोहत्यायाञ्च प्रायश्चित्त-
वर्णनम् । १३८७

आपस्तम्ब ऋषि से सब मुनियों ने गृहस्थाश्रम में
कृषि कम गो पालन में अनुचित व्यवहार से जो
दोष हो जाय उसका प्रायश्चित्त पूछा । आपस्तम्ब
ने बड़े सत्कार के साथ ऋषियों को बताया—
औषधि देने में, बालक को दूध पिलाने में साव-

- १ धानी करने पर भी विपत्ति आ जाय तो उसका दोष नहीं होता है। किन्तु औषधि तथा भोजन भी मात्रा से अधिक देना पाप है।

द्वौमासौ पाययेद्वत्सं द्वौमासौ द्वौ स्तनौ दुहेत्,

द्वौमासावेकवेलायां शेषकाले यथारुचि ॥२१

दशरात्राद्ध मासेन गौस्तु यत्र विपद्यते,

स शिखं वपनं कृत्वा ग्राजापत्यं समाचरेत् ॥२२

गाय के बन्धन कैसी रस्सियों से कैसे कीले पर बांधना यह बताया है (१-३४)।

- २ शुद्ध्यशुद्धिविवेकवर्णनम् ।

१३६०

उदकशुद्धिनिरूपणं, वापीकृपादीनां-शुद्धि
वर्णनम् ।

१३६१

शुद्धि और अशुद्धि का वर्णन, जैसे— काम करने वाले मनुष्यों को जल पानी की छूतपात नहीं होती है। वापी, कूप, तड़ाग जहाँ खारिया जल निकलता हो वह अशुद्ध नहीं होता है। पेशाब मल तथा थूकने से जल अशुद्ध हो जाता है (१-१४)।

- ३ गृहेऽविज्ञातस्यान्त्यजातेर्निवेशने-बालादि विषये
च प्रायश्चित्तम् । १३६२

अन्य जाति का परिचय न होने से अज्ञात दशा
में घर में रह ज.य तो उस द्विजाति को चान्द्रा-
यण या पराक प्राजापत्य व्रत करने का विधान ।
इसी प्रकार चाण्डाल कूप से जल आपत् दशा के
बिना लेने से प्रायश्चित्त (१-१२) ।

- ४ चाण्डालकूपजलपानादौ संस्पर्शे च प्रायश्चित्त० १३६३

चाण्डाल के कूप से जल पान पर प्रायश्चित्त (१-१३)

- ५ वैश्यान्त्यजश्वकाकोच्छिष्टभोजने प्रायश्चित्त-
वर्णनम् । १३६४

उच्छिष्ट भोजन (जूठा खाने पर) प्रायश्चित्त (१-१४)

- ६ नीलीवस्त्रधारणे नीलीभक्षणे च प्रायश्चित्तम् १३६७

नीले रंग के वस्त्र धारण करने का प्रायश्चित्त (१-१०)

- ७ अन्त्यजादि स्पर्शे रजस्वलाया विवाहादिषु
कन्याया रजोदर्शने प्रायश्चित्तम् । १३६७

रजस्वला स्त्री की अशुद्धि बताई है किन्तु रोग के

कारण जिस स्त्री का रज गिरता हो उसके स्पर्श करने से अशुद्ध नहीं होता है (१-२१) ।

८ सुरादिदूषितकरस्यशुद्धिविधानवर्णनम् १४००

शूद्रान्नभोजने निन्दानिरूपणवर्णनम् । १४०१

वर्तनों के शुद्ध करने का वर्णन, जैसे कांशा भस्म से शुद्ध होता है । शूद्रान्न भक्षण शूद्र के साथ भोजन का निषेध । जिसके अन्न को मनुष्य खाता है उस अन्न से जो सन्तान पैदा होती है वह उसी प्रकृति की होती है (१-२१) ।

९ अपेयपानेऽभक्ष्यभक्षणे च प्रायश्चित्तवर्णनम् १४०२

मक्षिकाकेशदूषितान्नभोजने प्रायश्चित्त-
वर्णनम् । १४०३

शुल्केनकन्यादानेदोषाभिधानं, स शुद्धि
वर्णनम् । १४०४

अपेय पान अभक्ष्य भक्षण में प्रायश्चित्त । स्वाध्याय तथा भोजन करते समय पैर में पादुका नहीं हो (१-४३) ।

१० मोक्षाधिकारिणामभिधानवर्णनम् । १४०६

विवाहोत्सवादिष्वन्तरामृत सूतके सद्यः शुद्धि
वर्णनम् । १४०७

भोजन करने का नियम । यम नियम की परि-
भाषा । अग्निहोत्र त्याग करनेवाले को वीरहा
कहते हैं । गृहस्थी को नित्य अग्निहोत्र करना
चाहिये (१-१६) ।

लघुशङ्खस्मृति के प्रधान विषय

१ दृष्टापूर्तकर्मणोःफलाभिधानवर्णनम् । १४०८

गङ्गायामस्थिप्रक्षेपेस्वर्गप्राप्तिः, वृषोत्सर्गादि
श्राद्ध वर्णनम् । १४०९

स्त्रियाःसपिण्डीकरणमनेकश्राद्धविवेकं
ब्रह्मघातकलक्षणञ्च १४११

चाण्डालघटजलपानमौषधदानादिकर्मणि
गोमृतेदोषाभावः । १४१३

मृताशौचमर्धवाससोजपहोमादिक्रियाणांनिन्दा १४१५

- १ इष्टापूर्त का माहात्म्य । गङ्गा में अस्थि प्रवाह का माहात्म्य । पितृ कर्म गया श्राद्ध का माहात्म्य । एकोद्दिष्ट श्राद्ध न कर पार्वण श्राद्ध करना व्यर्थ है । प्रति सम्बत्सर क्षयाह पर श्राद्ध करने का निर्णय सपिण्डी करने की विधि । पिता जीवित हो तो माता की सपिण्डी दादी के साथ, पिता न हो तो पिता के साथ माता का सपिण्डीकरण श्राद्ध करे । अपुत्र स्त्री पुरुष का पावण श्राद्ध न करे केवल एकोद्दिष्ट करे । संक्षिप्त प्रायश्चित्त का विधान वर्णन किया है (१-७१) ।

शङ्खस्मृति के प्रधान विषय

- १ ब्राह्मणादिनां कर्म वर्णनम् । १४१५
चातुर्वर्ण्य के पृथक् पृथक् कर्म, यथा ब्राह्मण का यजन-याजन, अध्ययन-अध्यापनादि; इस प्रकार चार वर्ण के पृथक् पृथक् कर्मों का वर्णन (१-८) ।
- २ ब्राह्मणादिनां संस्कारवर्णनम् । १४१६
गर्भाधान से उपनयन पर्यन्त संस्कारों का विधान (१-१२) ।

३ ब्रह्मचर्याद्याचारवर्णनम् । १४१८

ब्रह्मचर्य, विद्याध्ययन काल का आचरण तथा आचार्य गुरु उपाध्याय की व्याख्या । माता पिता गुरु के पूजन का महत्व । ब्रह्मचारी के नियम व्रत तथा आचरण (१-१२) ।

४ विवाहसंस्कारवर्णनम् । १४२०

आठ प्रकार के विवाहों की विधि का वर्णन (१-१५) ।

५ पञ्चमहायज्ञाः-गृहाश्रमिणां प्रशंसा-अतिथि वर्णनम् । १४२१

पञ्च महायज्ञ गृहस्थी के नित्य कर्म बताये हैं (१-१८) ।

६ वानप्रस्थधर्मनिरूपणं संन्यासधर्मप्रकरणञ्च १४२२

वानप्रस्थाश्रम की आवश्यकता और उसके धर्म का निरूपण (१-७) ।

७ प्राणायामलक्षणं धारणा-ध्यानयोगनिरूपण वर्णनम् । १४२५

ब्रह्माश्रमी के संन्यास की विधि । आत्मज्ञान प्राणायाम, ध्यान धारणादि योग का निरूपण (१-३४) ।

८ नित्यनैमित्तिकादिस्नानानां लक्षणवर्णनम् १४२८

षट् प्रकार के स्नान—नित्य स्नान, नैमित्तिक स्नान,
क्रिया स्नान, मलापकर्षण स्नान, क्रियाङ्ग स्नान
का समय तथा विधि [१-१६] ।

९ क्रियास्नानविधिवर्णनम् । १४२९

क्रिया स्नान के मन्त्र तथा विधान (१-१५) ।

१० आचमनविधिवर्णनम् । १४३१

प्राजापत्य देवतीर्थादि बताकर आचमन करने की
विधि, अंग स्पर्श का सन्ध्या करने से दीर्घायु का
होना बताया है (१-२) ।

११ अघमर्षणविधिवर्णनम् । १४३३

अघमर्षण कुष्माण्डी श्लुचा तथा पवित्र करनेवाले
मन्त्रों का विधान (१-५) ।

१२ गायत्रीजपविधिवर्णनम् । १४३४

गायत्री मन्त्र जपने की विधि और माहात्म्य
(१-३१) ।

१३ तर्पणविधि वर्णनम् । १४३७

देवऋषिपितृ तर्पण के मन्त्र एवं विधि (१-१७) ।

१४ श्राद्धे ब्राह्मणपरीक्षावर्णनम् ।

१४३८

श्राद्धे वर्ज्यब्राह्मणाः, पङ्क्तिपावनब्राह्मण-
निरूपणम्

१४३९

श्राद्धप्रकरणवर्णनम् ।

१४४१

पितृ कार्य में ब्राह्मण की परीक्षा करके निमन्त्रण करना तथा उनका किन किन मन्त्रों से पूजन करनी चाहिये इसका वर्णन किया है (१-३३) ।

१५ जननमरणाशौचवर्णनम् ।

१४४२

जन्म मरण में अशौच कितने दिन का किस वर्ण को होता है (१-२५) ।

१६ द्रव्यशुद्धिः, मृन्मयादि पात्रशुद्धिवर्णनम् । १४४४

पात्रों के शुद्ध करने की विधि तथा अपने अंगों को शुद्ध करने का विधान बताया है (१-२४) ।

१७ क्षत्रियादिवधे-यवाद्यपहारे-व्रतवर्णनञ्च

१४४७

विवत्सादीनां क्षीरपानेशूद्रादीनामन्नभोजने
वृत्तविधानम् ।

१४४९

१७ मघभाण्डागतशूद्रोच्छिष्टकाकोच्छिष्टादीनां
व्रतवर्णनम् ।

१४५१

पापों के प्रायश्चित्त । जिस पाप में जो प्रायश्चित्त
कहा है उनकी विधि । पराक व्रत, कृच्छ्र व्रत
तथा चान्द्रायणादि [१-६६] ।

गोश्चक्षीरं विवत्सायाः संधिन्याश्च तथा पयः ।
संधिन्यमेध्यं भक्षित्वा पक्षन्तु व्रतमाचरेत् ॥२६
क्षीराणि यान्यभक्ष्याणि तद्विकाराशने बुधः ।
सप्तरात्रं व्रतं कुर्याद्यदेतच्चपरिकीर्तितम् ॥२०

१८ अघमर्षण, पराक, वारुणकृच्छ्र, अतिकृच्छ्र,
सान्तपनादि व्रतम् ।

१४५३

अघमर्षण, पराक, सान्तपन तथा कृच्छ्र व्रत की
विधि (१-१६) ।

लिखितस्मृति के प्रधान विषय

- १ इष्टापूर्तकर्मवृषोत्सर्गगयाप्रिण्डदानषोडश-
श्राद्धानां वर्णनम् । १४५५
- उदककुम्भदानं अग्निस्थानं अपुत्रिणामेकोद्दिष्ट-
श्राद्धवर्णनम् । १४५७
- श्राद्धे-परश्राद्धभोक्तृ-श्राद्धकर्तृ-श्राद्धभोक्तृ
नियमाः, नवश्राद्धे भुञ्जानस्य प्रायश्चित्तम् १४६१
- कुब्ज वामनादिषु परिवेदनं, गोवधसमं,
चाण्डालघटोदकपान वर्णनम्— १४६३

इष्ट के करने से स्वर्ग प्राप्ति और पूर्त से मोक्ष प्राप्ति का वर्णन किया है। वापी, कूप, तड़ाग, देव मन्दिर तथा पतितों का जो उद्धार करें उसे पूर्त तथा अग्निहोत्र वंशदेवादि कार्य करें उसे इष्ट कहते हैं। इष्टापूर्त कर्म का विधान तथा लक्षण बताया है।

गङ्गा में अस्थि प्रवाह का माहात्म्य तथा एकोद्दिष्ट श्राद्ध का वर्णन, श्राद्ध में भोजन करनेवालों के

नियम तथा नव श्राद्धों का वर्णन एवं अशौच वर्णन तथा चाण्डाल के जल पान का निषेध (१-६६)

शङ्खलिखित स्मृति के प्रधान विषय

१ वैश्वदेवमकृत्वैवभुज्जानस्यकाकयोनिवर्णनम् १४६४

अतिथिपूजनं, परान्नभोजनं, राजप्रशंसा,
ब्राह्मणप्रशंसनवर्णनम् । १४६७

बलि वैश्वदेव, अतिथि पूजन का महत्व बताया है ।

परान्नं परवस्त्रं च परयानं परास्त्रियः ।

परवेश्मनि वासश्च शक्रस्यापि श्रियं हरेत् ॥

इत्यादि सांस्कृतिक जीवन का वर्णन किया गया है (१-३२) ।

वशिष्ठ स्मृति के प्रधान विषय

१ धर्मजिज्ञासाधर्माचरणस्यफलधर्मलक्षणं

आर्यावर्तपंचमहापातकवर्णनम् । १४६८

उपपातकब्राह्मविवाह ब्राह्मणादिवर्णाचार-
निरूपणम् । १४७१

धर्म का लक्षण, आर्यावर्त की सीमा, देश धर्म, कुल

धर्म का वर्णन । महापाप, पाप तथा उपपातकों का वर्णन । ब्राह्म, दैव, आर्ष और प्राजापत्य विवाह का वर्णन । सब वर्णों को ब्राह्मण से उपदेश ग्रहण करने की विधि (१-४५) ।

२ ब्राह्मणादीनां प्रधानकर्माणि-पातित्य हेतवः

कृषिधर्म निरूपणम् ।

१४७१

वार्षिकान्नभक्षणे, ब्राह्मणराजन्ययोर्निषेधः १४७३

द्विजत्व की परिभाषा तथा आचार्य की श्रेष्ठता बताई है । ब्राह्मण के षट् कर्म का निरूपण, गुरु की आज्ञा पालन, प्रत्येक वर्ण की अपनी अपनी वृत्ति का वर्णन । धन अन्नादि की वृद्धि की सीमा और धन वृद्धि पर ब्राह्मण क्षत्रिय को निषेध बताया है (१-५५) ।

३ अश्रोत्रियादीनां शूद्रसधर्मत्वमाततायिवध

वर्णनञ्च ।

१४७५

आचार्य लक्षणम्, श्वहत मृगादीनां शुचित्व-
वर्णनम् ।

१४७७

अनेक शुद्धिः, शूद्रस्यासंस्कारे हेतुवर्णनम् १४७६

ब्राह्मण को वेद पढ़ना आवश्यक । बिना वेद विद्या

के अन्य शास्त्रों का पढ़नेवाला ब्राह्मण शूद्र कहलाता है। धर्माधर्म निर्णेता वेदज्ञ हो। वेदज्ञ को ही दान देना। आततायी के लक्षण। आचमन कब कब करना चाहिये। भूमि में गड़े हुए धन के सम्बन्ध में भूमि शोधन एवं पात्र शोधन का वर्णन (१-६४)।

४ मधुपर्कादिषु-पशुहिंसनवर्णनम् ।

१४८०

शवाशौचवर्णनम् ।

१४८१

ब्राह्मणादि वर्ण जिस प्रकार वेदों में बताया हैं उनका विशदीकरण। मधुपर्क का विधान, अशौच क्रिया के नियम, अशौच काल का वर्णन (१-३१)।

११२६६

५ आत्रेयी धर्म वर्णनम् ।

१४८२

प्रथम स्त्री का कतव्य वह अपनी शक्ति का ह्रास न होने दे एवं स्वतन्त्र न रहे, पिता, पति तथा पुत्रों की देख-रेख में रहे। रजस्वला काल में रहन-सहन तथा इन्द्र ने पाप देने के अनन्तर स्त्रियों को जो वरदान दिया उसका दिग्दर्शन।

अध्याय	प्रधानविषय	पृष्ठाङ्क
६	आचारप्रशंसा, हीनाचारस्यनिन्दावर्णनम् । नद्यादिषु मूत्रपुरीषोत्सर्गनिषेधशौचमृत्तिका- प्रमाणवर्णनम् ।	१४८४ १४८५
	सत्पात्र लक्षणमञ्जलिना जलं न पिबेदाचार निरूपणञ्च ।	१४८७
	सांस्कृतिक जीवनीवाले मनुष्य के आचार तथा रहन-सहन की विधि (१-४०) ।	
७	ब्रह्मचारिधर्मवर्णनम् । ब्रह्मचारी के धर्म का वर्णन (१-१२)	१४८७
८	गृहस्थधर्मवर्णनम् । गृहस्थी के आचार एवं रहन-सहन का वर्णन (१-१७) ।	१४८८
९	वानप्रस्थधर्मवर्णनम् । वानप्रस्थी के धर्म का वर्णन किया गया है (१-६) ।	१४९०
१०	यतिधर्मवर्णनम् । यति धर्म संन्यासाश्रम सबका त्याग करे किन्तु वेदों का त्याग न करे । यथा—	११

सन्यसेत्सर्वकर्माणि वेदमेकं न संन्यसेत् ।

एकाक्षरं परं ब्रह्म प्राणायामः परन्तपः ॥

भिक्षा लेने में हर्ष विषाद त्याग दे (१-२४) ।

११ वैश्वदेवातिथिश्राद्धादीनां वर्णनम् । १४६२

श्राद्धभोजनसमये भोक्तव्यन्नगुणत्याज्यवर्णनम् १४६५

प्रथम अर्घ्य अर्थात् पूजा के योग्य ऋत्विग्, कन्या का दान लेनेवाला वर, राजा, स्नातक, गुरु आदि तथा श्राद्ध विधि का वर्णन और ब्रह्मचारी के नियम बताये हैं (१-५६) ।

१२ स्नातकव्रतं, वस्त्रादिधारणविधिवर्णनम् । १४६७

स्नातकाचारवर्णनम् । १४६६

स्नातक के व्रत एवं आचार का वर्णन किया है (१-४५) ।

१३ उपाकर्मविधिवेदाध्ययनस्यानध्यायनिरूपणम् १५००

उपाध्यायाचार्यादीनां गुरुत्वमिति निरूपणम् । १५०१

उपाकर्म की आवश्यकता तथा विधान । ऋत्विग् आचार्य के आतिथ्य करने के लिये घर पर पधारने पर सत्कार करने की आवश्यकता बताई है ।

१४ चिकित्सकादीनामन्नभोजने निषेधवर्णनम् । १५०३

काकादिसंस्पृष्टान्नस्य पर्युषिताद्यन्नस्य च शुद्धिः १५०५

अभोज्य अन्न विवाहादि यज्ञ में यदि काक आदि
से अन्न दूषित भी हो जाय वहाँ पर वह अभक्ष्य
नहीं है (१-३७) ।

१५ दत्तकप्रकरणवर्णनम् । १५०६

चरितव्रतानांपतितानां प्रत्युद्धारविधिवर्णनम् १५०७

दत्तक पुत्र के सम्बन्ध में वर्णन किया गया है
(१-१६) ।

१६ व्यवहारविधिवर्णनम् । १५०८

साक्षिप्रकरणवर्णनम् । १५०९

राजा मन्त्री की संसद् का वर्णन । साक्षी के
लक्षण, असत्य साक्षी का दण्ड तथा असत्य कहने
पर पाप बताया है (१-३२) ।

१७ पुत्रिणांप्रशंसावर्णनम् । १५१०

औरसपुत्रादीनांलक्षणवर्णनम् । १५११

भ्रातृणां दायविभागवर्णनम् । १५१३

पुत्ररहितस्य धनभाजने क्रमवर्णनम् ।

१५१५

पुत्र के होने से पिता पितृभ्रूण से छुटकारा पा जाता है। पुत्रवान् को स्वर्गादि लोक प्राप्ति, क्षेत्रज पुत्र उसका पुत्र है जिसने गर्भाधान किया है (१-३८)। एक पिता के कई पुत्र हों उनमें यदि एक भाई के भी पुत्र है तो सब भाई पुत्रवाले माने जाते हैं इसी प्रकार किसी के तीन चार स्त्री हो उनमें यदि एक स्त्री के भी सन्तान हो जाय तो सब पुत्रवती मानी जाती है। दाय्याद अदाय्याद सन्तति का वर्णन। स्वयमुपागत पुत्र के सम्बन्ध में हरिश्चन्द्र अजीर्त का इतिहास तथा गुनशेष के यूपबन्धन का इतिहास जैसे वह विश्वामित्र का पुत्र हुआ। दाय विभाग का वर्णन, दाय्याद ६ पुत्र एवं अदाय्याद ६ पुत्रों का वर्णन (३८-७६)।

१८ चाण्डालादिजात्यन्तरनिरूपणम् ।

१५१६

चाण्डालादि जाति प्रतिलोम से बताई है, जैसे— ब्राह्मणी माता शूद्र पिता से जो सन्तान हो वह चाण्डाल होती है। इसका तात्पर्य यह है कि प्रत्येक मनुष्य अपनी अपनी जाति में विवाह करे उससे जो सन्तान होगी वह धार्मिक तथा

मनुष्यता के व्यवहारवाली होगी यह बताया गया है (१-१६) ।

१६ राजधर्माभिधानवर्णनम् । १५१७

अदण्डदण्डनेपुरोहितादेः प्रायश्चित्तम् । १५१६

राजा को सब वर्ग के धर्म की रक्षा करनी चाहिये अपराधियों को बिना दण्ड दिये छोड़ने से राजा को पापी कहा है (१-३४) ।

२० प्रायश्चित्तप्रकरणवर्णनम् । १५२०

ब्राह्मणसुवर्णहरणेप्रायश्चित्तवर्णनम् । १५२३

विभिन्न प्रकार के प्रायश्चित्त ।

गुरुरात्मवतांशास्ता शास्ता राजा दुरात्मनाम् ।

इह प्रच्छन्नपापानां शास्तावैवश्रुतो यमः, इति ॥

भ्रूणहत्या और ब्रह्मघ्न के प्रायश्चित्त का वर्णन (१-५२) ।

२१ ब्राह्मणीगमने शूद्रवैश्यक्षत्रियाणां प्रायश्चित्त-
वर्णनम् । १५२४

गोवधाघनेकप्रायश्चित्तवर्णनम् । १५२५

प्रतिलोम विवाह में उग्र प्रायश्चित्त, यथा; शूद्र पुरुष

ब्राह्मणी के साथ सहवास करे उस शूद्र को अग्नि में जला देना । इस प्रायश्चित्त के देखने से विचार होता है शिष्ट शान्ति प्रधान धर्म प्रवक्ता होने पर भी प्रतिलोम विवाह पर अपने उग्र विचार को प्रकट करते हैं । इसका तात्पर्य यह है कि प्रतिलोम सन्तान से संस्कृति का नाश हो जाता है । संस्कृति के नाश से राष्ट्र का नाश अवश्यम्भावी है (१-३६) ।

२२ अयाज्ययाजनादि प्रायश्चित्तवर्णनम् । १५२७

यज्ञ करने में जिन असंस्कृत पुरुषों का अधिकार नहीं है और लोभवश जो ब्राह्मण उनसे यज्ञ करावें उस यज्ञ से सृष्टि में उत्पात होने के कारण उन ब्राह्मणों को प्रायश्चित्त करने को लिखा है (१-१०) ।

२३ ब्रह्मचारिणः स्त्रीगमने प्रायश्चित्तवर्णनम् । १५२८

रेतसः प्रवत्नोत्सर्गादिविषये प्रायश्चित्तवर्णनम् १५२९

भ्रूणहत्यायांप्रायश्चित्तान्तरकथनं, कृच्छ्रविधिवर्णनञ्च । १५३१

ब्रह्मचारी को स्त्री समागम होने से पातित्य का प्रायश्चित्त । भ्रूण हत्या, कुत्ता के काटने पर,

पतित चाण्डाल से सम्बन्ध करने पर कृच्छ्र व्रत,
चान्द्रायणादि व्रतों की व्यवस्था बताई है (१-४३) ।

२४ कृच्छ्रातिकृच्छ्रविधिवर्णनम् । १५३२

कृच्छ्रातिकृच्छ्र चान्द्रायण की परिभाषा (१-८) ।

२५ रहस्यप्रायश्चित्तवर्णनम् । १५३२

अविख्यापितदोषाणां पापानां महतां तथा ।

सर्वेषां चोपपापानां शुद्धिं वक्ष्याम्यशेषतः ॥

गुप्त रखे हुए जो अपने पाप हैं उन रहस्य पापों का
पृथक् पृथक् प्रायश्चित्त बताये हैं (१-१२) ।

२६ साधारणपापक्षयोपायविधानवर्णनम् । १५३४

प्राणायाम, सन्ध्या, जप, सावित्री जप, पुरुष सूक्त
आदि से पापों के क्षय होने का वर्णन किया है ।
धर्मशास्त्र के पढ़ने से पापक्षय होता है ऐसा
बताया है (१-२०) ।

२७ वेदाध्ययनप्रशंसावर्णनम् । १५३६

आहारशुद्धिनिरूपणम् । १५३७

वेदरूपी अग्नि से पाप राशि नष्ट होती है इत्यादि

का वर्णन तथा वेद पढ़ने की प्रशंसा एवं आहार शुद्धि का वर्णन बताया है (१-२१) ।

२८ स्वयंविप्रतिपन्नादीनां दूषितस्त्रीणांत्यागाभाव—

कथनम् ।

१५३८

स्त्रीणांपतनहेतवः सर्ववेदपक्विभिधानवर्णनम् १५३९

बलात्कार से उपभुक्त स्त्री त्याज्य नहीं होती है
यथा—

स्वयं विप्रतिपन्ना वा यदिवा विप्रवासिता ।

बलात्कारोपभुक्ता वा चोरहस्तगताऽपिवा ॥

न त्याज्या दूषितानारी नास्यास्त्यागो विधीयते ।

पुष्पकालमुपासीत ऋतुकालेन शुध्यति ॥

स्त्री का त्याग (तलाक) करना स्मृति विरुद्ध है ।

शतरुद्रिय, अथर्वशिर, त्रिसुपर्ण, गोसूक्त और अश्व-
सूक्त के पाठ करने से पापों से मुक्त हो जाता है ।

(१-२२) ।

२९ दानादीनां फलनिरूपणवर्णनम् ।

गोदान, छत्रदान, भूमिदान, पादुका दान, विविध
प्रकार के दान तथा मौन व्रत का माहात्म्य [१-२२]

३० प्राणाग्निहोत्रविधिवर्णनम् ।

१५४२

ब्राह्मण भोजन कराने का माहात्म्य तथा प्राणाग्नि-
होत्र विधि का वर्णन किया है [१-११] ।

औशनस संहिता के प्रधान विषय

अनुलोमप्रतिलोमजात्यन्तराणानिरूपणवर्णनम् १५४४

अनुलोम विवाह की सन्तान तथा प्रतिलोम
सन्तान की जातियों का वर्णन । सूत, वेणुक,
मगध, चाण्डाल आदि जाति और इनके लोम
विलोम जाति का विस्तार तथा उनकी वृत्ति एवं
कार्य का वर्णन आया है [१-५१] ।

औशनस स्मृति के प्रधान विषय

- | | | |
|---|--------------------------------------|------|
| १ | ब्रह्मचारिणां क्रमागतकर्तव्यवर्णनम्— | १५४६ |
| २ | ब्रह्मचारिधर्मवर्णनम् । | १५५१ |
| | ब्रह्मचारिणां धर्मसारवर्णनम् । | १५५३ |

इस अध्याय में शौनकादि ऋषियों ने भार्गव को
विनम्र भाव से प्रणाम कर धर्मशास्त्र का निर्णय
पूछा । उत्तर में औशनस ने सांस्कृतिक जीवन

का स्तर विधिवत् उपनयन वेदाध्ययन से प्रारम्भ कर मनुष्य के आचरण का चित्रण वैज्ञानिक भित्ति पर किया जिस प्रकार के संस्कृत जीवन से मनुष्यता का सच्चा विकाश हो जाय (१-६४) ।

२ ब्रह्मचारिप्रकरणे शौचाचारवर्णनम् । १५५६

किस किस समय आचमन कर शुद्ध होना चाहिये यहां से प्रारम्भ कर ब्रह्मचारी के सम्पूर्ण कर्म शौचाचार ब्रह्मचारी की शिक्षा पद्धति का सुचारु निरूपण किया है ।

ब्रह्मचारिप्रकरणेऽनेकप्रकरणवर्णनम् । १५६०

ब्रह्मचारिप्रकरणे गायत्रीमन्त्रसारवर्णनम् १५६५

ब्रह्मचारिप्रकरणेऽनेकविचारवर्णनम् । १५६७

ब्रह्मचारिप्रकरणे नित्यनैमित्तिकविधिवर्णनम् १५६९

नैमित्तिकश्राद्धविधिवर्णनम्- १५७१

श्राद्धप्रकरणवर्णनम् । १५७३

विद्या पढ़ने की विधि, गुरु के प्रति व्यवहार, ब्रह्म-चारी के धर्म, वेदाध्ययन की आवश्यकता स्वाध्यायी

ब्रह्मगति को प्राप्त करता है। भोजन की विधि, पञ्च प्राणाहुति की विधि, प्रातः कृत्य का विधान, पिण्डदान का माहात्म्य बताया है। अमावास्या अष्टका आदि श्राद्धकाल, पात्र ब्राह्मण श्राद्धकाल, अस्थि संचयन, गया श्राद्ध माहात्म्य किस अन्न से पितरों की कितने काल तक तृप्ति होती है। श्राद्ध में किस किस अन्न को वर्जित किया है। पिण्डोदक नवश्राद्ध आदि का विस्तृत वर्णन किया है (१-१४७)।

४ श्राद्धप्रकरणवर्णनम् ।

१५७४

श्राद्ध में कैसे ब्राह्मणों को आमन्त्रण करना उनके लक्षण। मूर्ख ब्राह्मणों को भोजन कराने पर पितरों का पतन आदि का विस्तार पूर्वक वर्णन किया है (१-३६)।

५ श्राद्धप्रकरणवर्णनम्—

१५७८

पिण्डदान विधि और उसके मन्त्र विस्तार से बताया गये हैं (१-६६)।

६ अशौचप्रकरणवर्णनम् ।

१५८७

सूतक पातक अशौच कितने दिन का किसको

होता है । सपिण्डता, सगोत्रता, समानोदक कितनी पीढ़ी तक है तथा सद्यः शौच कब होता है एवं पातक सूतक का वर्णन है (१-६१) ।

७ गृहस्थानांप्रेतकर्मविधिवर्णनम् । १५६३

सपिण्डीकरणश्राद्धाविधानवर्णनम्— १५६५

प्रेत क्रिया प्रथम दिन से द्वादश दिवस तक का वर्णन किया है (१-२३) ।

८ प्रायश्चित्तप्रकरणवर्णनम् । १५६६

महापापों का प्रायश्चित्त (१-२४) ।

प्रायश्चित्तवर्णनम् । १५६६

प्रायश्चित्तप्रकरणेऽभक्ष्यवर्णनम् । १६०३

अनेकपापानांप्रायश्चित्तवर्णनम् । १६०५

अनेक प्रकार के पाप कामज क्रोधज अभक्ष्यादि पापों के पृथक् पृथक् प्रायश्चित्त विधान (१-१०६) ।

बृहस्पति स्मृति के प्रधान विषय

ससुवर्णपृथ्वीदानफलमहत्त्ववर्णनम् । १६१०

गोचर्मलक्षणं पृथिवीदानफलवर्णनम् । १६११

सफलं नीलवृषभलक्षणं, भूमिहर्तुर्निन्दावर्णनम् १६१२

अन्यायेन भूमिहरणे फलं—

कन्यानृतादिविषये दोषनिरूपणफलम् १६१५

तडागादिनिर्माणफलाभिधानम् १६१७

इन्द्र ने शत यज्ञ समाप्त कर गुरु बृहस्पति से दान माहात्म्य एवं उत्कृष्ट दान पूछा । उत्तर में गुरु बृहस्पति ने सुवर्ण दान और भूमिदान का माहात्म्य बताया किन्तु भूमिदान सुपात्र विद्यावान् तपस्वी ब्राह्मण को ही देना बताया, अपात्र (मूर्ख अतपस्वी) को देने से पाप भी बताया है (१-८१) ।

लघुव्यास स्मृति के प्रधान विषय

१ सफलं स्नानविधिवर्णनम्— १६१८

सफलं सन्ध्याकर्तव्यवर्णनम्— १६२१

प्रातःकाल ब्राह्म मुहूर्त में स्नान करना चाहिये । स्नान के पूर्व जिन वृक्षों के दत्तौन करने हैं उनका नाम तथा सूर्योपस्थान सन्ध्या प्रति दिन करने का

आदेश, बिना सन्ध्या किये जो कुछ पूजा दान
करे वह निष्फल होता है (१-३१) ।

२	कर्तव्यकर्मविशेषवर्णनम्	१६२१
	शरीरशुद्धिवर्णनम्	१६२३
	नित्यकर्मवर्णनम्	१६२५
	पञ्चमहायज्ञवर्णनम्	१६२७
	भोजनाद्यनेकप्रकरणवर्णनम्	१६२६

नित्यकर्म का विधान, देव यज्ञ, पितृ यज्ञादि पञ्च
यज्ञ, जप करने की विधि तथा जपमाला कंसी
और किस वस्तु की होनी चाहिये यह बताया
गया है । तीर्थस्नान एवं अघमर्षण सूक्त का
माहात्म्य । शिवपूजन मन्त्र, वैश्वदेव कर्म भूत-
बलि, अतिथि का पूजन, भोजन करने का नियम,
काल, ग्रहण काल में भोजन करने का निषेध,
शयन का नियम, कैसी सय्या होनी चाहिये तथा
किस ओर शिर करना इत्यादि मानवाचार का
विशदीकरण किया गया है (१-६२) ।

(वेद) व्यास स्मृति के प्रधान विषय

१ धर्माचरणदेशप्रयुक्त-वर्ण-षोडशसंस्कारवर्णनम् १६३१

गर्भाधानादिषोडशसंस्कारवर्णनम्— १६३३

वर्ण विभाग अनुलोम प्रतिलोमों की भिन्न-भिन्न जाति की संज्ञा उनके कर्म गर्भाधानादि संस्कार यज्ञोपवीत धारण काल जाति परत्व एवं ब्रह्मचारी के व्रत (१-४१) ।

२ विवाहविधिवर्णनम् १६३५

गृहस्थधर्मवर्णनं, स्त्रीधर्माभिधानवर्णनम् १६३७

स्त्रीणांनित्यकर्म, सपातिव्रत-

रजस्वलाधर्मनिरूपणञ्च— १६३६

यदि स्नातक द्वितीयाश्रम (गृहस्थाश्रम) में जाना चाहे तो विधिवत् सवर्ण कन्या के साथ विवाह करे अन्य से नहीं । पुरुष विवाह करने पर ही पूर्ण शरीरधारी होता है (१-१८) । स्त्री के कर्तव्य का वर्णन आया है, यथा—

२ पत्युः पूर्वं समुत्थाय देहशुद्धिं विधाय च ।

उत्थाप्य शयनाद्यानि कृत्वा वेश्मविशोधनम् ॥

पति के जागने से प्रथम शयन से उठकर घर की शुद्धि, वस्त्रादिकों को यथा स्थान में रखने (१६-४१) पुरुष का कर्तव्य स्त्री के प्रति “गच्छेद्युग्मासुरात्रिषु” इत्यादि । यह भारतीय संस्कृति का नियम प्रत्येक गृहस्थी को आदरणीय एवं आचरणीय है (४२-५७) ।

३ सस्नानादिविधिपूर्वाह्नकृत्यवर्णनम्	१६४१
तर्पणविधिवर्णनम्	१६४३
पाकयज्ञादिविधिनिरूपणम्	१६५५
गृहस्थाह्निकवर्णनम्	१६४७

गृहस्थी के नित्य नैमित्तिक काम्य कर्मों का निर्देश तथा उषाकाल में जागकर कर्म में प्रवृत्त होने की विधि । सन्ध्या कर्म, पितृ तर्पण वेदाध्ययन, धर्मशास्त्र इतिहास को प्रातःकाल पढ़ने का विधान (१-२०) । पाकयज्ञ विधान, दान का माहात्म्य, गुणवान् को ब्राह्म में भोजन कराना वेदादि शास्त्र के ज्ञाता को ही ब्राह्मणत्व में हेतु बताया है ।

एक पाँक्त में सबको समान भोजन देना, शूद्राज भक्षण का दोष (२१-७१) ।

४	गृहस्थाश्रमप्रशंसापूर्वकतीर्थधर्मवर्णनम्	१६४८
	दानधर्मप्रकरणवर्णनम्	१६४९
	दानधर्मप्रकरणेसत्पात्रनिरूपणवर्णनम्	१६५१
	ब्राह्मणप्रशंसनवर्णनम्	१६५३

सांस्कृतिक जीवनी का वर्णन, माता पिता ही परम तीर्थ है । दान के विषय में यथा—

यद्दाति यदश्नाति तदेव धनिनां धनम् ।

अन्ये मृतस्य क्रीडन्ति दारैरपि धनैरपि ॥

दान देना तथा धन का भोग करना यही अपना धन समझो । धन होने पर दाता भोक्ता बनो यह धार्मिक नैतिक अनुशासन बताया है । पढ़े हुए पुरुष का जीवन सफल और अनपढ़ का जीवन निरर्थक है । आचार्य आदि की परिभाषा, सुपात्र को दान देने से ही वह सफल होता है (१-७२) ।

देवल स्मृति के प्रधान विषय

प्रायश्चित्तवर्णनम्—	१६५५
बलान्स्लेच्छैर्नीतानां स्त्रीणांविषयेप्रायश्चित्तम्	१६५६
स्लेच्छसम्बन्धिप्रायश्चित्तवर्णनम्—	१६६१
सांत्तपनादिकृच्छ्रचान्द्रायणान्तविधिवर्णनम्—	१६६३

समुद्र तट पर ध्यानावस्थित देवल से ऋषियों ने पूछा कि महाराज ! स्लेच्छों के साथ जिनका सम्पर्क हो गया है अर्थात् जो पुरुष बलात् या स्वेच्छा से धर्म परिवर्तन कर चुका है उसको क्या करना चाहिये जिससे वह पुनः अपनी जाति में पावन हो जाय । इसके उत्तर में ऋषि देवल ने उन सबका प्रायश्चित्त विभिन्न प्रकार से बताया । प्रारम्भ में अपेय पान अभक्ष्य भक्षण से सब प्रकार के सांसर्गादि पातित्य कर्मों में पृथक्-पृथक् प्रायश्चित्त कर सबकी शुद्धि बताई है । प्रायश्चित्तों के करने पर अन्त में गङ्गा स्नान से शुद्धि बताई है । इस स्मृति में जाति शुद्धि, देह शुद्धि और समाज शुद्धि पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है (१-६०) ।

१

प्रजापति स्मृति के प्रधान विषय

ब्रह्माणं प्रति रुचेः प्रश्नः, श्राद्धकालाभिधानञ्च १६६४

श्राद्धप्रकरणवर्णनम् १६६५

श्राद्धपाकार्हस्त्रीणामभिधानम् १६६६

ब्राह्मणनिमन्त्रणम्, श्राद्धार्हब्राह्मणानां निरूपणम् १६७१

श्राद्धकृत्रियमनिरूपणम् १६७३

श्राद्धोपादेयानि, श्राद्धोपासनीयानि पात्राणि १६७५

श्राद्धोऽत्याज्यवस्तुवर्णनम् । १६७७

श्राद्धकालाभिधानवर्णनम् । १६७६

श्राद्धो ब्राह्मणसंख्या, पार्वणादिश्राद्धवर्णनम् । १६८१

इस स्मृति में एक ही श्राद्ध कर्म का पूर्णाङ्ग पूर्ण विधि से वर्णन किया गया है । शुक्राचार्य के कथन से श्राद्धकल्प में उथल पुथल हो गई थी । श्राद्ध कर्म के न करने से द्विजाति बलहीन और राक्षस बल हरण करनेवाले हो गये थे । अतः श्राद्धकल्प पर प्रजापति श्राद्ध के सम्बन्ध में श्राद्ध के भेद, श्राद्ध विधि,

- १ श्राद्ध के मन्त्र सम्पूर्ण कहे हैं । इस स्मृति के अध्य-
यन से श्राद्ध कर्म की आवश्यकता तथा सम्पूर्ण
विधि मालूम हो जायगी । श्राद्ध के नियम, श्राद्ध
काल, आभ्युदयिक श्राद्ध का माहात्म्य, श्राद्ध की
सामग्री, श्राद्ध में पुण्य पाठ, श्राद्ध करने से पित्तों
की वृत्ति एवं श्राद्धकर्ता दीर्घायु, पुत्रवान्, धनवान्,
ऐश्वर्यवान् होता है (१-१६८) ।

लघ्वाश्वलायन स्मृति के प्रधान विषय

- | | |
|---|------|
| १ आचारप्रकरणवर्णनम् । | १६८३ |
| ब्रह्मचारिगृहस्थधर्मवर्णनम् । | १६८४ |
| स्नानवस्त्राचमनपूर्वकसन्ध्योपासनविधिवर्णनम् | १६८७ |
| गायत्रीमन्त्रजपपूर्वकप्रातर्होमविधिवर्णनम् | १६८६ |
| मध्याह्नस्नानादिविधिपूर्वकब्रह्मयज्ञः
विधानवर्णनम् | १६६१ |
| ऋणत्रयविमुक्त्यर्थदेवर्षिपितृतर्पणम् | १६६३ |
| सर्वैश्वदेवभूतवत्यतिथिभिक्षादानानां वर्णनम् । | १६६५ |
| परान्नत्यागिनामामान्नदानं, भोजनविध्यु-
च्छिष्टादिसंस्पर्शवर्णनम् । | १६६७ |

१ ब्रह्ममार्गाचारप्रकरणवर्णनम्—

१६६६

आश्वलायन गृह्यसूत्र के निर्माता भी हैं। इस स्मृति में शंख, औशनस, व्यास और प्राजापत्यादि स्मृतियों की रीति पर व्यवहार प्रकरण का स्थान नहीं है केवल धार्मिक और सांस्कृतिक आचार का ही विस्तृत वर्णन है। इससे इन स्मृतियों की प्राचीनता का अनुमान होता है। यथा—
 “धर्मकताना पुरुषाः यद्वासन् सत्यवादिनः” जब जनता धर्मपरायण रही उस समय सब सत्यवादी होते थे। इस कारण व्यवहार अर्थात् दण्डदापन राजशासन-विधि की आवश्यकता न होने से व्यवहार प्रकरण का विस्तार नहीं रखा गया है। इस अध्याय में मुनियों ने आश्वलायन आचार्य से द्विजातियों के धर्म कहकर मनुष्यों के सांस्कृतिक जीवन के आचार पर प्रश्न किया, साथ ही यह बताया कि इस प्रकार के आचरण करनेवाले मनुष्य स्वर्गगामी होते हैं। द्विज शब्द यहाँ पर मनुष्य शब्द का वाचक है। प्रातःकाल ब्राह्म मुहूर्त में उठना, शौचाचार एवं स्नान के मन्त्रों का वर्णन किया है (१-३६)। सूर्यार्घ्य, सायं, प्रातः और

- १ मध्याह्न संध्या तथा सूर्योपस्थान की विधि (४०-६८)।
अग्निहोत्र की विधि तथा स्त्री के साथ ही अग्निहोत्र
कर्म हो सकता है (६६-७२)। वेदाध्ययन की
विधि (७३-९०)। तर्पण विधि (९१-११३)।
श्राद्ध कर्म, बलि वैश्वदेव, हन्तकार एवं श्राद्धकाल
का वर्णन (११४-१४२)। पञ्चमहायज्ञ, मधुपर्क
विधान, वैश्वदेव तथा काशी में शरीर त्याग से
मुक्ति का होना बताया है (१४३-१८६)।

- २ स्थालीपाकप्रकरणम्— १७०१
स्थाल्यादीनां प्रमाणं, पूर्णपात्रस्थापनादि-
कर्मनिरूपणम्— १७०३
आज्योत्पवन स्रुवसंस्कारादिक्रमाभिधानवर्णनम् १७०५
अग्निरूपस्थानादिकर्मवर्णनम्— १७०७

इस सम्पूर्ण अध्याय में स्थालीपाक यज्ञ का साङ्गो-
पाङ्ग विधान है। जो सामयिक गृहस्थी होते हैं
उनको स्थालीपाक यज्ञ के पूर्व दिन पूर्णभासी को
प्रायश्चित्त कर संकल्प करना चाहिये कि मैं कल
स्थालीपाक यज्ञ करूँगा। अन्वाधान कर स्थाली-
पाक यज्ञ की एक हाथ चौरस वेदी बनाकर गोवर

२ से लेपन कर रेखोल्लेखन, प्रोक्षण कर्म, अग्नि-
स्थापन, अग्निपूजन, ध्यान, परिस्तरण, प्रोक्षणी पात्र,
स्रुव चमस, आज्यपात्र, स्रुक् स्रुव स्थापन समिधा-
हरण आदि सम्पूर्ण विधि लिखी है (१-८०) ।

३ गर्भाधानप्रकरणम् । १७०८

गर्भाधान की विधि का वर्णन किया है (१-१६) ।

४ पुंसवनानवलोभनसीमन्तोन्नयनप्रकरणम् ० १७१०

पुंसवन सीमन्त कर्म की विधि तथा समय का
वर्णन है (१-१६) ।

५ जातकर्मप्रकरणवर्णनम्— १७१२

जातकर्मसंस्कार की विधि (१-५) ।

६ नामकरणप्रकरणवर्णनम् । १७१३

नामकरण की विधि और नाम किस अक्षर से
किस बालक का करना इसका निर्णय लिखा है ।
कुमार के कान में मन्त्र जपकर पिता उसके नाम
को कहे (१-७) ।

७ निष्क्रमणप्रकरणवर्णनम् । १७१४

चतुर्थ मास में निष्क्रमण कर्म लिखा है (१-३) ।

८ अन्नप्राशनप्रकरणवर्णनम्— १७१५

छठे महीने में अन्नप्राशन की व्यवस्था बताई है
(१-५) ।

९ चौल(चूड़ाकरण)कर्मप्रकरणवर्णनम् । १७१५

चूड़ाकर्म संस्कार तृतीय वर्ष में करने का विधान ।
चूड़ाकर्म से विवाह पर्यन्त लौकिकाग्नि में हवन
करने का विधान बताया है (१-२२) ।

१० उपनयनप्रकरणवर्णनम् । १७१८

उपनयन संस्कार की विधि । ब्राह्मण कुमार का
अष्टम वर्ष में उपनयन संस्कार, मौञ्जी कर्म, मेखला
धारण, गायत्री उपदेश की विधि, स्विष्ट कृत,
होमादि, उपनयन संस्कार की पूर्ण विधि बताई है
(१-६१) ।

११ महानाम्न्यादिब्रतत्रयप्रकरणम् १७२४

उपनयन संस्कार के अनन्तर एक वर्ष होने पर
उत्तरायण में महानाम्नी ब्रत का विधान । द्वितीय
वर्ष में महाब्रत, तृतीय वर्ष में उपनिषद् ब्रत ये तीन
ब्रत ब्रह्मचारी को उपनयन संस्कार के अनन्तर
तीन वर्ष के भीतर करने चाहिये (१-८) ।

१२ उपाकर्मप्रकरणवर्णनम् ।

१७२५

उपाकर्म का विधान श्रावण के महीने में हस्त नक्षत्र में करने का निर्देश किया है (१-१७) ।

१३ उत्सर्जनप्रकरणवर्णनम् ।

१७२७

उत्सर्ग-षण्मास (छै मास) में उत्सर्ग कर्म वेद जो पढ़े हैं उनकी पुष्टिके लिये उत्सर्ग कर्म करे (१-७) ।

१४ गोदानादित्रयप्रकरणवर्णनम्

१७२८

गोदान कर्म में जो सोलहवें वर्ष की अवस्था में उपनयन के अनन्तर होता है चौल कर्म की रीति पर हवन कर ब्रह्मचारी को वस्त्रभूषा धारण करने की विधि बताई है (१-६) ।

१५ विवाहप्रकरणवर्णनम्

१७२९

विवाह का विधान (गृहस्थाश्रम) कन्या के विवाह की रीति पद्धति का वर्णन । ब्रह्मचर्याश्रम से गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने की विधि । विवाह संस्कार कर बधू को वर अपने घर में लावे उस समय के आचार यज्ञादि का विधान (१-८०) ।

१६ पत्नीकुमारोपवेशनप्रकरणवर्णनम्

१७३७

धर्म कार्यों में पत्नी को वाम भाग में, आशीर्वाद के समय दक्षिण भाग में बैठाने का विधान है। पुत्रोत्पत्ति से मौजूबीबन्धन कर्म तक कर्ता उत्तर में एवं पत्नी पुत्र के दक्षिण में बैठे (१-६)।

१७ अधिकारिनियमप्रकरणवर्णनम्—

१७३७

इस अध्याय में पुत्र के संस्कार करने में किस किस का अधिकार कब कब है इसकी विवेचना की गई है (१-५)।

१८ नान्दीश्राद्धेपितृप्रकरणवर्णनम् ।

१७३८

आधान काल, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, उपनयन, महाव्रत, गोदान, संस्कार समावर्तन और विवाहादि सम्पूर्ण मंगल कार्यों में नान्दी श्राद्ध करने का नियम बताया है (१-६)।

१९ विवाहहोमेपरिवर्ज्यप्रकरणवर्णनम् ।

१७३९

किसी शुभ कार्य में नान्दी श्राद्ध होने के अनन्तर जबतक मण्डप का विसर्जन न हो तबतक सपि-

ण्डता होने पर भी कोई अशुभ कर्म प्रेत कृत्य
मुण्डनादि करने का निषेध बताया है (१-६) ।

२० प्रेतकर्मविधिवर्णनम् ।

१७४०

पुत्र को पिता आदि का प्रेत कर्म, शव दाह आदि
प्रेत कर्म करने का विचार । अशौच का निरूपण
दिखाकर अन्त में आत्मनिष्ठ को किसी प्रकार का
अशौच नहीं लगता है (१-६२) ।

२१ लोकेनिन्द्यप्रकरणवर्णनम् ।

१७४६

सदाचार भ्रष्ट क्रियाहीन की निन्दा तथा निन्दित
कर्म से उत्पन्न सन्तान असंस्कृत है जिनके यहाँ
यजन करने वाले ब्राह्मणों को निन्दित बताया है
(१-१६) ।

२२ वर्णधर्मप्रकरणवर्णनम्

१७५१

वर्णधर्म—ब्राह्मण की श्रेष्ठता यदि वह वेदज्ञ हो,
वेदों का उपदेश कर्ता हो । ब्राह्मण का अपमान
करना एवं उससे सेवा कराने में पाप बताया है
(१-२४) ।

२३ श्राद्धप्रकरणवर्णनम् ।

१७५३

श्राद्ध कर्म की विधि एवं उसका माहात्म्य । इसे विधि पूर्वक करनेवाले की सब कामना सफल होकर सायुज्य मुक्ति होती है तथा पितरों की प्रसन्नता से वह सम्पूर्ण कामनाओं को प्राप्त कर ज्ञाननिष्ठ होता है (१-११३) ।

२४ श्राद्धोपयोगिप्रकरणवर्णनम् ।

१७६४

श्राद्ध करने का माहात्म्य । जो व्यक्ति क्षयाह में आलस्य वा प्रमाद से माता पिता का श्राद्ध विधिवत् नहीं करता है उसके पितर उस सन्तान से जैसे निराश होते हैं वैसे ही वह सन्तान भी अधोगति को प्राप्त होती है । जो माता पिता का विधिवत् अर्थात् श्राद्ध करने की जो विधि बताई है जैसे योग्य ब्राह्मण श्राद्ध में निमन्त्रित किये जाते हैं उस पूर्ण विधि से जो श्राद्ध करता है उसके पितर तृप्त होते हैं । वह पुरुष आत्मनिष्ठ होकर स्वयं इस संसार से तरजाता है एवं दूसरों को भी तार देता है (१-३१) ।

बौधायन स्मृति के प्रधान विषय

१ प्रश्न१ सशिष्टधर्मवर्णनम् ।

१७६७

आरड्डकादिनिषिद्धदेशगमनेप्रायश्चित्तम् । १७६८

बौधायन स्मृति में धर्म की प्रधानता अर्थ की गौणता प्राचीन वैदिकाचार का वर्णन है । इसमें मुख्य तीन प्रश्नों का निर्णय है । प्रथम प्रश्न— “उपदिष्टो धर्मः प्रति वेदम्” “तस्यानुव्याख्यास्यामः” “स्मार्तो द्वितीयः” “तृतीयः शिष्टागमः” । “उपदिष्टो धर्मः प्रतिवेदम्” इसकी व्याख्या १२ अध्यायों में क्रमशः वर्णन की गई है । “शिष्टागम” की परिभाषा स्वयं बौधायन ने की है । “विगतमत्सर-निरहंकारकुम्भीधान्या अलोलुपदम्भदर्पलोभमोह-क्रोधविवर्जिताः” धर्म का ज्ञान वेदों से होता है । वेद के अभाव में स्मृति ग्रन्थों से शिष्ट पुरुषों द्वारा परिषद् का निर्णय । परिषद् का निर्णय इस प्रकार बताया है—

चातुर्वेधं विकल्पी च अङ्गविद् धर्मपाठकः ।

आश्रमस्थास्त्रयो विप्राः पर्षदेषा दशावरा ॥

१ वेदस्मृत्यादिज्ञान से रहित परिषद् को प्रमाणित नहीं बताया है । यथा—

यथा दारुमयोहस्ती यथा चर्ममयोमृगः ।

ब्राह्मणश्चानधीयानस्त्रयस्ते नामधारकाः ॥

उत्तर तथा दक्षिण में जो आचार हैं उनपर विप्रतिपत्ति और आर्यावर्त की सीमा का वर्णन । यह धर्मशास्त्र यज्ञ संस्कारादि आर्यावर्त ब्रह्मावर्त के लिये ही है (१-३७) ।

२प्र०१ ब्रह्मचारिधर्मवर्णनम् ।

१७७०

ब्रह्मचारी के नियम अष्टम वर्ष में ब्राह्मण का उपनयन तथा ऋतु परत्व उपनयन काल, वसन्त में ब्राह्मण, ग्रीष्म में क्षत्रिय एवं शरद् में वैश्य का उपनयन समय, मौञ्जीबन्धन, भैक्ष्यचर्या एवं ब्रह्मचारी की शिक्षा, अवकीर्णों का दोष, ब्रह्मचर्य का माहात्म्य । यह प्रथम प्रश्न धर्म क्या है इस सम्बन्ध में आया है (१-५५) ।

३प्र०१ स्नातकधर्मवर्णनम् ।

१७७४

धर्म के निर्णय के सम्बन्ध में प्रथम प्रश्न के ही

उत्तर में यह अध्याय है। इस अध्याय में स्नातक के नियम एवं व्रत हैं (१-१३)।

४प्र०१ कमण्डलुचर्यामिधानवर्णनम्।

१७७५

स्नातक के शौचाचार, कमण्डलु से जल के प्रयोग का विधान एवं रीति बताई गई है (१-२८)।

५प्र०१ शुद्धिप्रकरणवर्णनम्।

१७७७

प्रथम प्रश्न के ही प्रसंग में इस अध्याय का वर्णन किया है। शुद्धि का विधान है। यथा—

अद्भिः शुष्यन्ति गात्राणि बुद्धिर्ज्ञानेन शुष्यति।

अहिंसया च भूतात्मा मनः सत्येन शुष्यति, इति ॥

यहां से शरीर, बुद्धि, देह और मन की शुद्धि बताकर यज्ञोपवीत धारण की रीति तथा उसकी शुद्धि, पादप्रक्षालनादि, नदी में स्नान की रीति, वस्तु भाण्डादि की शुद्धि, अविज्ञात भौतिक जीवों की चट्ट प्रकार की शुद्धि, आसन, शय्या और वस्त्र की शुद्धि के सम्बन्ध में, शाक, फल, पुष्पों की प्रक्षालन से ही शुद्धि बताई है।

अशौच में सपिण्डता को लेकर दस दिन में शुद्धि

५ होती है। कुत्ते के काटने पर प्राणायामादि से शुद्धि एवं अभक्ष्य का वर्णन। गाय का दूध गाय के सूतने पर दस दिन के अनन्तर शुद्ध होता है। इस प्रकार सब बातों की शुद्धि करनी धर्म का अङ्ग बताया है (१-१६३)।

६प्र०१ यज्ञाङ्गविधिनिरूपणम् । १७८७

मूत्रपुरीषाद्युपहतद्रव्याणां शुद्धिवर्णनम् । १७८६

यज्ञ में जिन जिन द्रव्यों का आवश्यकता होती है उनका निरूपण तथा यज्ञपात्र एवं वस्त्रादिकों की शुद्धि।

७प्र०१ पुनः यज्ञाङ्गविधिवर्णनम् । १७९०

आभ्यन्तर तथा बाह्य दो प्रकार के यज्ञ के अङ्ग बताये हैं। आभ्यन्तर अङ्ग, बाह्य ऋत्विगादि इस प्रकार यज्ञाङ्ग का संक्षिप्त निदर्शन और शुद्धि बताई है (१-३०)।

८प्र०१ ब्राह्मणादिवर्णनिरूपणम् । १७९२

चातुर्वर्ण्य निरूपण, अनुलोमज की पृथक् पृथक् जाति, अनुलोमज, प्रतिलोमज की ब्राह्म्य संज्ञा कही

गई है। इस कारण ब्रात्यता होने से उनको सावित्री उपदेश का अनधिकार कहा गया है (१-१६)।

६ प्र० १ सङ्करजातिनिरूपणम् ।

१७६३

रथकारादि वर्णसङ्कर जाति की परिगणना कर इनको ब्रात्य कहा है (१-१६)।

१० प्र० १ राजधर्मवर्णनम् ।

१७६४

वर्णानुकूल मनुष्यों को वृत्ति देना, कर लगाना, ब्रह्माहत्यादि महापापों का प्रायश्चित्त, पाप के निर्णय में साक्षिता देखे, मिथ्या साक्षी को पाप तथा दण्ड एवं प्रायश्चित्त व्रत (१-४०)।

११ प्र० १ अष्टविवाहप्रकरणवर्णनम् ।

१७६७

आठ प्रकार के विवाहों की परिभाषा। उन विवाहों में चार शुद्ध और चार अशुद्ध। जैसा विवाह वैसी ही सन्तान। आसुरादि से अशुद्ध सन्तान। द्रव्य देकर ग्रहण की हुई स्त्री पत्नी संज्ञा नहीं पाती है उसके साथ यज्ञादि कर्म नहीं हो सकते हैं (१-२२)।

११ अनध्यायकालवर्णनम् ।

१७६८

अनध्याय काल अष्टमी, चतुर्दशी आदि बताई हैं
(२३-४३) ।

१२ प्र० १ पूर्वोक्तानेकविधप्रकरणवर्णनम् ।

१७६९

संक्षिप्त से धर्म का निर्णय । यहां तक प्रथम प्रश्न
के उत्तर में कहा गया है (१-२१) ।

१ प्र० २ प्रायश्चित्तप्रकरणवर्णनम् ।

१८००

समुद्रसंयानादिपतनीयकर्मणां निरूपणम् १८०३

उपपातकवर्णनम्, तिलविक्रेयनिषेधवर्णनञ्च १८०५

(स्मार्तो धर्मः) इसके निर्णय में प्रथम अध्याय में प्रायश्चित्त विधान बताया है । भ्रूण हत्या करने वाले को १२ वर्ष तक प्रायश्चित्त, इसी प्रकार ब्रह्म-हत्या करनेवाले को भी द्वादश वर्ष का प्रायश्चित्त और मातृगामी को तप्त लोह में लेटाना तथा लिङ्गच्छेद प्रायश्चित्त इत्यादि पञ्च महापातकियों का पृथक्पृथक् प्रायश्चित्त । ब्रह्मचारी स्त्री प्रसंग करे उसे अवकीर्णी कहकर उससे गर्दभ यज्ञ करावे इस प्रकार महापातकियों के प्रायश्चित्त का निरूपण किया गया है (१-६६) ।

२प्र०२	दायविभागवर्णनम्,	
	औरसादिपुत्राणां वर्णनञ्च—	१८०६
	स्त्रिया अस्वातन्त्र्यकथनम् ।	१८०६
	अगम्यस्त्रीणामभिधानवर्णनम् ।	१८११

दाय विभाग, स्त्रियों की शक्ति को किसी प्रकार क्षीण न होने देना इसके लिये पति, पुत्र एवं पिता का उत्तरदायित्व, अगम्या जो स्त्री जिस पुरुष को है उसका निरूपण ।

३प्र०२	देवादितर्पणविधिवर्णनम् ।	१८१२
	स्नातकव्रतवर्णनम् ।	१८१३

स्नातक के व्रत तथा आचार, पूज्यजनों से कैसा व्यवहार करना चाहिये (१-६६) ।

४प्र०२	सन्ध्योपासनविधिवर्णनम् ।	१८१७
	सन्ध्या कर्म की विधि और कर्तव्यता (१-३०) ।	

५प्र०२	मध्याह्नस्नानविधिवर्णनम् ।	१८१६
	ब्रह्मयज्ञाङ्गतर्पणवर्णनम् ।	१८२०

मध्याह्न कर्म से प्रारम्भ कर ब्रह्मयज्ञाङ्ग, अग्नि,

प्रजापति, साम, रुद्रादि दैवत तर्पण विस्तार से
निरूपण किया है (१-२१२) ।

६प्र०२ पञ्चमहायज्ञविधिवर्णनम्— १८२७

आश्रमधर्मनिरूपण वर्णनम्— १८२६

पाँच महायज्ञों की विधि (१-४४) ।

७प्र०२ शालीनयायावराणामात्मयाजिनां

प्राणाहुति व्याख्यानम्— १८३०

शालीन यायावरो को प्राणाहुति की विधि तथा
मन्त्रों का निरूपण (१-३०) ।

८प्र०२ श्राद्धाङ्गाग्नौकरणादिविधिनिरूपणम् १८३३

त्रिमधु, त्रिणाचिकेत, त्रिसुपर्णा, पञ्चाग्नि, षडङ्गवित्
ज्येष्ठ सामक, स्नातक ये पङ्क्ति पावन बताये हैं ।
इनके द्वारा श्राद्ध में अग्नि कार्य के विधान का
निरूपण किया है (१-३१) ।

९प्र०२ सत्पुत्रप्रशंसावर्णनम् । १८३६

सत्पुत्र का वर्णन किया है “पुत्रेण लोकाञ्जयति”
अच्छी सन्तान से पिता स्वर्गादि लोक में विजयी

होता है “सत्पुत्रमुत्पाद्याऽऽत्मनं तारयति” सत्पुत्र की महिमा कही है (१-१६)।

१० प्र० २ संन्यासविधिवर्णनम् ।

१८३७

भोजनेभ्युन्यादीनां ग्राससंख्यावर्णनम् १८४१

संन्यास की विधि—संन्यास का धर्म विस्तार से निरूपण कर इसी के परिशिष्ट १७ सूत्रों में उसका विधान, “शालीन यायावरौ” का आचार, संन्यासी के त्रिदण्ड का माहात्म्य बताया है (१-८६)।

१ प्र० ३ शालीनयायावरादीनां धर्मनिरूपणम्

१८४४

शालीन और यायावरों की वृत्ति तथा धर्म का निरूपण किया है। शाला में आश्रय करने से शालीन एवं श्रेष्ठ वृत्ति के धारण करने से यायावर। इनकी नौ प्रकार की वृत्ति बताई है। जैसे— १ षण्निवर्तनी, २ कौहली, ३ कुल्या, ४ संप्रक्षालनी, ५ समूहा, ६ पालिनी, ७ शिलोन्ध्रा, ८ कापोता, ९ सिद्धा। इनके अतिरिक्त दशम वृत्ति भी बताई है। आहिताग्नि तथा यायावर की वृत्ति का वर्णन है (१-२०)।

२प्र०३ षण्निवर्तन्यादिवृत्तीनांस्वरूपकथनम् १८४६

षण्निवर्तन्यादि वृत्तियों का स्पष्टीकरण है, षण्निवर्तनी, कौहली आदि का विशदीकरण है तथा शिलोब्ध वृत्ति की परिभाषा (१-३८)।

३प्र०३ पचमानकापचमानकमेदेनवानप्रस्थस्य-

द्वै विध्यवर्णनम्---

१८४६

दो प्रकार के वानप्रस्थ—पचमानक और अपचमानक के लक्षण तथा उनके धर्म, वन में रहने का माहात्म्य (१-२५)।

मृगैः सहपरिस्पन्दः संवासस्ते(स्त्वे)भिरेव च ।

तैरेव सदृशीवृत्तिः प्रत्यक्षं स्वर्गलक्षणम् ॥

४प्र०३ ब्रह्मचारिणभक्ष्यभक्षणेप्रायश्चित्तवर्ण० १८५१

ब्रह्मचारी को स्त्री के सहवास तथा निषेध पदार्थों के भक्षण में प्रायश्चित्त का निरूपण (१-११)।

५प्र०३ अघमर्षणकल्पन्याख्यानवर्णनम् । १८५२

तीर्थ में जाकर सूर्याभिमुख होकर अघमर्षण सूक्त प्राप्तिः, मध्याह्न और सायं तीन काल में एक सौ

बार पाठ करने से ज्ञाताज्ञात उपपातकों से शुद्ध हो जाता है (१-७) ।

६प्र०३ आत्मकृतदुरितोपशमायप्रसृत-

यावकस्यहवनविधिवर्णनम् ।

१८५३

दुरित क्षयार्थ एक प्रस्थ यव के हवन का विधान (१-२१) ।

७प्र०३ कूष्माण्डहोमविधिवर्णनम् ।

१८५५

कूष्माण्डी ऋचा “यद्देवा देव हेऽनं” इत्यादि तीन मन्त्रों से हवन करने से ब्रह्मचारी के स्वप्नदोष आदि प्रायश्चित्त का विधान है (१-२२) ।

८प्र०३ चान्द्रायणकल्पाभिधानवर्णनम् ।

१८५६

चान्द्रायण कल्प का विधान बताया है (१-४०) ।

९प्र०३ अनश्नत्परायणविधिव्याख्यानम् ।

१८५९

निराहार व्रत या फलाहार व्रत कर जो मन्त्र इसमें लिखे हैं उनसे हवन करने से चक्षु का प्रकाश बढ़ेगा (१-२१) ।

१० प्र० ३ वाप्यकर्मणोपेतस्थनिष्कयार्थ

जपादिनिरूपणम् ।

१८६१

अयाज्य याजन जिसका दान नहीं लेना उसका दान लेना इत्यादि कर्मों का प्रायश्चित्त, जप आदि का निरूपण (१-१८) ।

१ प्र० ४ चक्षुःश्रोत्रत्वग्घ्राणमनोव्यतिक्रमादिषु-

प्रायश्चित्तम् ।

१८६३

विवाहात्प्राक्कन्यायारजोदर्शनेदोषनिरूपणम् १८६५

प्रकीर्ण प्रायश्चित्तों का वर्णन है, यथा जिस अंग से जो पाप किया गया उनका पृथक् पृथक् प्रायश्चित्त तथा संकीर्ण पापों का प्रायश्चित्त (१-३२) ।

२ प्र० ४ प्रायश्चित्तविधिवर्णनम् ।

१८६७

प्रायश्चित्त की विधि बताई है (१-२०) ।

३ प्र० ४ प्रायश्चित्तविधिवर्णनम् ।

१८६६

छोटे छोटे पापों का प्रायश्चित्त एवं विधि । अघ-
मर्षण सूक्त तथा कृष्णाष्टी मन्त्रों से प्रायश्चित्त
(१-१६) ।

अध्याय प्रधानविषय पृष्ठाङ्क

४प्र०४ प्रायश्चित्तविधिव० १८७०

स्वल्पापराध के प्रायश्चित्त (१-१०) ।

५प्र०४ कुच्छ्रान्तपनादि व्रतविधिवर्णनम् १८७१

कुच्छ्र, सांतपनादि व्रत की विधि बताई है (१-३३) ।

६प्र०४ मृगारेष्टिः पवित्रेष्टिश्चवर्णनम् १८७५

मृगारेष्टि पवित्रेष्टि का विधान । अपातक कर्म छोटे व्यवहार वर्जित कर्मों के शोधनार्थ (१-१०) ।

७प्र०४ वेदपवित्राणामभिधानवर्णनम् १८७६

पाप कर्म से निवृत्त होकर पुण्य कर्म में प्रवृत्त होने पर वैदिक मन्त्रों के पाठ से प्रोक्षण (१-१०) ।

८प्र०४ गणहोमफलमेतदध्यापनादौ-

फलनिरूपणञ्च ।

१८७७

गण होम, अग्नि वायु आदि देवताओं का पूजन तथा स्मृति के पाठ और ज्ञान का माहात्म्य । स्मृति शास्त्र के परिशीलन तत् प्रदर्शित संस्कार सम्पन्नता से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है (१-१७) ।

॥ स्मृति संदर्भ के तृतीय भाग की विषय-सूची समाप्त ॥

॥ शुभम् भूयात् ॥